हज़रत सरकारे सरकारां
सय्यद बदीउद्दीन अहमद
कुतुबुलमदार
जिन्दाशाह मदार रज़ि०
फ़ैज़ाने
सिलसिलए मदारिया
मुफ़्ती अबुल हम्माद मुहम्मद इसराफ़ील हैदरी मदारी
@MadaariMedia
मिलने का पता
मदार बुक डिपो
मकनपुर शरीफ़, जिला कानपुर नगर-209202(यू०पी०)
Rs. 17/-

سلسلۂ مداریہ کے بزرگوں کی سیرت و سوانح
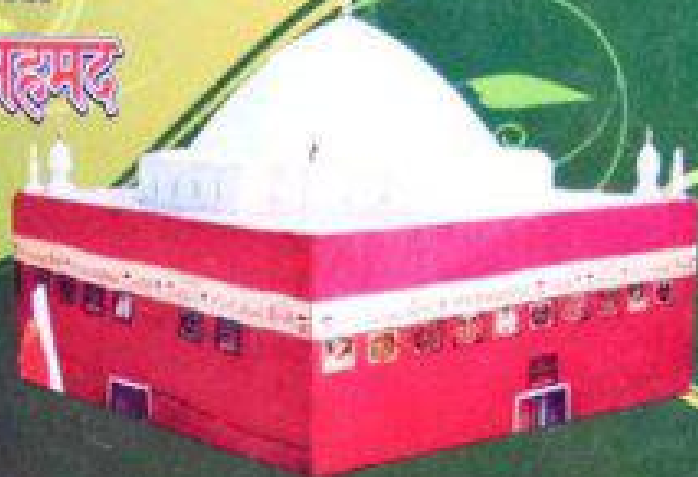
سلسلۂ عالیہ مداریہ سے متعلق کتابیں

سلسلۂ مداریہ کے علماء کے مضامین تحریرات

سلسلۂ مداریہ کے شعراء اکرام کے کلام

حاصل کرنے کے لئے اس ویب سائیٹ پر جایئے

www.MadaariMedia.com

Authority : Ghulam Farid Haidari Madaari

मुफ़्ती
अबुल हम्माद मुहम्मद इसराफ़ील हैदरी मदारी

मिलने का पता
मदार बुक डिपो मकनपुर शरीफ़
कानपुर नगर - 209202 (यू०पी०)

कुत्बुल मदार......एक तआरुफ़

कुत्बुल मदार उफ़ुके विलायत पर एक ऐसा चमकता सूरज है जिसकी ज़िया से एशिया व यूरोप में अहले इस्लाम की फ़िक्रें रोशन हैं, कुलूब मुनव्वर हैं, और ज़हनों में उजाला है ।

शम्सुल अफ़लाक की किरनों से बर्रे सग़ीर ही नहीं मुमालिक यूरोप व अफ़ेरिका की ख़ानक़ाहें और दर्सगाहें पुरनूर हैं । माहिरीने तवारीख़ व आसार और असहाबे सियर पर कुत्बुल मदार सैयद बदीअ उद्दीन ज़िन्दा शाह मदार रज़ी अल्लाहु तआला अन्हु की ज़ात व सवानेह मख़फ़ी नहीं है । 596 साला हयाते तैयबा पर खामा फ़रसाई करना और उस मुबारक के हर गोशे, हर पहलू की तसवीर बनाना किस के बस की बात है ।

अलबत्ता मुख़्तसर सवानेह लिखकर सवानेह निगारों की फ़ेहरिस्त में नाम दर्ज करा लेना भी कोई कम सआदत नहीं है । इस सआदत के हुसूल के लिए कुत्बुल मदार का एक सवानही ख़ाका पेशे ख़िदमत है :

आपका नामे नामी : बदीअ उद्दीन अहमद

मशहूर अलक़ाब : शाह मदार, ज़िन्दा शाह मदार, ज़िन्दा मदार, शेख़े मदार, कुत्बुल मदार, ज़िन्दा पीर, ज़िन्दा वली, मदारे आज़म, सरगिरोहे अहले तबक़ात, पीर ज़िन्दा मदार मदारुल आलमीन वग़ैरह ।

अहले तरीक़त के यहाँ :

आप ज़िन्दाने सूफ़ और अब्दुल्लाह के नाम से मौसूम हैं ।

पैदाइश :

यकुम शव्वाल 242 हि0 को परदए ख़िफ़ा से आलमे ज़हूर में शहरे हल्ब में रौनक़ बख़्श हुए और अपने वालिदे गिरामी सैयद अली

हलबी के घर को पुरनूर फ़रमाया ।

रोज़े पीर की सआदतें और ईद की मसर्रतें सआदतमन्द बेटे की आमद आमद से और पुरबहार हो गयी । (साहिबे आलम/ 242 हिजरी) से तारीख़े विलादत का माद्दा निकलता है ।

विलादत से क़ब्ल बशारतें :

नज्मुल हुदा कुत्बुल वरा का मुसन्निफ़ रक़मतराज़ है कि जब 242 हिजरी के मुहर्रमुल हराम का चाँद नुमूदार हुआ तो आपकी वालिदा माजिदा बीबी फ़ात्मा सानिया ने ख़्वाब देखा कि सूरज उनके आँगन में तुलूअ हो रहा है और देखते देखते अचानक कमाल दर्जा रोशन हो जाता है और उसकी शुआएं क़रीब और दूर की जगहों तक फ़ैल जाती हैं । इधर आपके वालिदे बुज़ुर्गवार जनाब क़ाज़ी सैयद अली हलबी ख़्वाब देखते हैं कि रहमते आलम नूरे मुजस्सम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम जलवा अफ़रोज़ होकर इरशाद फ़रमाते हैं कि ऐ अली ! अनक़रीब अल्लाह तुम्हें एक नेक फ़रज़न्द अता फ़रमायेगा जो अपने वक़्त का बड़ा वली होगा । बदीअ उद्दीन के नाम से शोहरत पायेगा । उसी मुबारक रात में नूरे मदारियत जबीने कुदवतुद्दीन हलबी से फ़ात्मा सानिया के बत्ने मुबारक में मुन्तक़िल हो चुका था ।

विलादत के वक़्त करामात का ज़हूर :

आपकी वालिदा माजिदा फ़रमाती हैं कि आपकी पैदाइश के वक़्त मख़सूस अनवार व रहमत का मुशाहदा हुआ । हर तरफ़ से मरहबा बे वली अल्लाह की सदाएं सुनाई दे रही थीं । पैदा होते ही मौलूद ने सर ब सुजूद होकर अल्लाह का शुक्र अदा किया और बज़बाने फ़सीह कलमा तैयबा की शहादत अदा फ़रमाई ।

आपका नसब नामा :

नजीबुत्तरफ़ैन यानी हसनी हुसैनी सैयद हैं । बाप की तरफ़ से हुसैनी और माँ की तरफ़ से हसनी ।

वालिद माजिद की तरफ़ से आपका नसबनामा यह है :

सैयद बदीअ उद्दीन बिन क़ाज़ी सैयद कुदवतुद्दीन अली हलबी इब्ने सैयद बहा उद्दीन इब्ने सैयद ज़हीरुद्दीन अहमद इब्ने सैयद इस्माईल सानी इब्ने सैयद मुहम्मद इब्ने सैयद इस्माईल इब्ने सैयद इमाम जाफ़र सादिक़ इब्ने सैयद इमाम मुहम्मद बाक़र इब्ने सैयद ज़ैनुल आबदीन अली इब्ने सैयदुश्शोहदा इमाम हुसैन शहीदे करबला इब्ने मौलाए कायनात सैयद अली मुर्तज़ा कर्रमल्लाहु तआला वजहहुल करीम व रिज़वानुल्लाह तआला अलैहिम अजमई ।

वालिदा माजिदा की तरफ़ से आपका नसब नामा यह है :

सैयद बदीअ उद्दीन अहमद इब्ने सैयदा फ़ातमा सानिया मारूफ़ ब बीबी हाजरा तबरेज़िया बिन्त सैयद अब्दुल्लाह इब्ने सैयद मुहम्मद ज़ाहिद इब्ने सैयद अबू मुहम्मद आबिद इब्ने सैयद सालेह मुहम्मद इब्ने सैयद अबी यूसुफ़ अब्दुल्लाह इब्ने सैयद अबुल क़ासिम मुहम्मद नफ़्सुज़्ज़कीया इब्ने सैयद अब्दुल्लाहुल महज़ इब्ने सैयद हसन मुसन्ना इब्ने सैयद इमाम हसन इब्ने मौला अली हैदरे कर्रार रज़ी अल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन ।

रस्मे बिस्मिल्लाह ख़्वानी :

जब आप की उम्र शरीफ़ चार साल चार महीने चार दिन की हुई तो आपके वालिदे बुज़ुर्गवार आलिमे दीन अल्लामा सदीदुद्दीन हुज़ैफ़ा मरअशी शामी की आग़ोशे तरबियत में सुपुर्द फ़रमाया । उस्ताज़े मोहतरम ने बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम से तालीम की इब्तिदा कराई और आपकी फ़हम व फ़रासत और खुदादाद सलाहियत को देखकर बेसाख़्ता पुकार उठे "हाज़ा वली अल्लाह, हाज़ा वली अल्लाह" यह लड़का अल्लाह का वली है, यह अल्लाह का वली है

। चौदह साल की उम्र में कुरआन, तफ़सीर, हदीस, फ़िक़्ह वग़ैरह उलूमे दीनिया में आपको महारत हासिल हो गयी । हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम ने इल्मे लदुन्नी से आरास्ता व पैरास्ता फ़रमाया और उलूमे अम्बिया में से इल्म सीमिया, कीमिया, और रीमिया वग़ैरह नवादिर उलूम की तालीम से आपको मुकम्मल फ़रमाया ।

बारगाहे सुलतानुल आरफ़ीन में :

जब उलूमे ज़ाहिरा की तकमील से फ़राग़त मिली तो जज़्बए शौक़ ने उलूमे बातिना की तहसील का मुश्ताक़ बनाया। वालिद माजिद ने अपने सिलसिलए जद्दिया जाफ़रीया हुसैनिया की इजाज़त व ख़िलाफ़त से मुमताज़ फ़रमाया । एक रात आपने ख़्वाब में देखा कि हुज्जाजे किराम मुक़ामे अराफ़ात में जमा हैं । जब आपने यह दिलकश मन्ज़र देखा तो आपका पैमानए सब्र लबरेज़ हो गया और ज़ियारते हरमैन शरीफ़ैन के लिए मचलने लगे । पूरी रात बेक़रारी में गुज़री । सुबह सुबह वालिदे गिरामी के हुज़ूर हाज़िर हुए और हरमैन शरीफ़ैन की ज़ियारत के लिए इजाज़त तलब की । इज़्ने ज़ियारत मिलने के बाद आप पा प्यादा रवाना हुए । रास्ते में एक जगह महवे इबादत थे कि हातिफ़े ग़ैबी से बशारत हुई कि बैतुल मुक़द्दस में आपका इन्तिज़ार हो रहा है । आप वहाँ तशरीफ़ ले जाएं । हुज़ूर मदारे पाक ने इस मुक़ाम से बैतुल मुक़द्दस का रुख़ फ़रमाया । जब आप रहने बैतुल मुक़द्दस में क़दम रंजा हुए तो सुलतानुल आरिफ़ीन बायज़ीद बुस्तामी रज़ी अल्लाहु तआला अन्हु आपका इन्तिज़ार फ़रमा रहे थे ज्यूंही सुलतानुल आरिफ़ीन की निगाह आप पर पड़ी कुछ देर तक आपको देखते रहे बिल आख़िर आपको अपने सीने से इस तरह लगा लिया गोया कोई बिछड़ा हुआ मुद्दतों बाद मिला हो बायज़ीद पाक ने आपको शरफ़े बैअत से सरफ़राज़ फ़रमाया और अपनी निस्बतों और ख़िलाफ़तों से सरफ़राज़ फ़रमाया और निस्बते तैफ़ूरिया बसरीया तैफ़ूरिया सिद्दीक़िया और तैफ़ूरिया जाफ़रीया का माज़ून व मजाज़ क़रार दिया । हुज़ूर मदारे पाक ने सुलतानुल आरिफ़ीन की तरबियत में तवील वक़्त गुज़ारा

। सुलूक के मनाज़िल व मदारिज तय किये । इरफ़ान की नेमतों से मालामाल हुए और मुरशिद की इजाज़त से आज़िमे हरमैन शरीफैन हुए । मक्का मुकर्रमा पहुँचकर फ़रीज़ए हज अदा फ़रमाया । अरकाने हज से फ़राग़त के बाद मदीना मुनव्वरा का क़स्द फ़रमाया । दयारे हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम में पहुँच कर मक़ामाते मुक़द्दसा व गुम्बदे ख़ज़रा की ज़ियारतों से मुशर्रफ़ हुए ।

एक रात रौज़ए तैयबा के पास दुरूद व सलाम में मशग़ूल थे कि क़िस्मत का सितारा बुलन्द हुआ । रहमते आलम नूरे मुजस्सम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम अपनी तजल्लियों के साथ जलवाबार हुए और जूद व सख़ा और इनआम व अता का इज़ाफ़ा फ़रमाया और मज़ीद तालीम व तरबियत के लिए आपको मौलाए कायनात अली मुर्तज़ा करमुल्लाह वजहहुल करीम के सुपुर्द फ़रमाकर हुक्म दिया कि ऐ अली ! अपने इस फ़रज़न्द को उलूमे मारफ़त व हक़ीक़त से मुज़य्यन करके मेरे पास हाज़िर करो । मौलाए कायनात ने मदारे पाक को रूहानी तालीम व तरबीयत फ़रमाकर बारगाहे रिसालत मआब सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम में पेश फ़रमाया । रहमते तमाम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने आपको मज़ीद ख़ुसूसी नवाज़िशात से मुशर्रफ़ फ़रमाया और इस्लामे हक़ीक़ी से आरास्ता व पैरास्ता फ़रमाया और हुक्म दिया कि ऐ बदीअ उद्दीन अब कूच की तैयारी करो। हिन्दुस्तान जाकर कलेमतुल्लाह को बुलन्द करो, इस्लाम की तबलीग़ से अहले हिन्द के सीनों में नूरे तौहीद की शमअ रौशन करो। हर तरफ़ नूरे वहदत का चराग़ जला दो । ईमान व इस्लाम की अज़मतों से वहाँ के बाशिन्दों को रूशनास कराओ कि मुझे हिन्दुस्तान से ईमान की ख़ुशबू महसूस हो रही है । सैयदे कौनेन की इजाज़त पाकर अल्लाह पाक पर तवक्कुल करके बग़ैर ज़ादेराह व राहला के आपने हिन्दुस्तान के लिए अज़्मे सफ़र फ़रमाया। दिन भर रोज़ा रहते शाम को ग़ैब से दो रोटी मुहैया होती इसमें से एक तनावुल फ़रमा लेते और एक सदक़ा कर देते । हिजाज़े मुक़द्दस

और अरब के मुख़्तलिफ़ ख़ित्तों का सफ़र फ़रमाते हुए साहिले जद्दा पर तशरीफ़ लाए । हिन्दुस्तान आने वाले एक पानी के जहाज़ (बड़ी कश्ती) पर सवार हो गये । अहले कश्ती के सामने वहदानियत की तालीम पेश की और कलमए हक़ "ला इ लाहा इललल्लांहु मुहम्मदुर्ररसूलल्लाहि" सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की तबलीग़ फ़रमाई । अहले कश्ती चूंकि काफ़िर थे बूरे वहदत का यह जाम इन्हें रास न आया सबने हक़ कुबूल करने से इंकार कर दिया । सरकार मदार पाक अहले कश्ती की इस रविश से मुलूल ख़ातिर हुए । परवरदिगारे आलम को अपने महबूब वली की क़ल्बी तकलीफ़ गवारा न हुई । मशीयत को जलाल आ ही गया । ग़ज़बे इलाही से समन्दर मे एक तूफ़ान बरपा हुआ । कश्ती टुकड़े टुकड़े होकर ग़र्क़ हो गयी । एक तख़्ता बुमूदार हुआ । उसपर बैठ कर मरज़ीए मौला के सहारे खमबात गुजरात के साहिल पर आप आ लगे । समन्दर के खारी पानी और मौजों के थपेड़ों से आपके कपड़े ज़ौलीदा व बोसीदा हो गये । भूख प्यास की शिद्दत से निढाल थे आपने दुआ की या अल्लाह पाक ! कोई ऐसी तदबीर फ़रमादे कि मुझे भूख प्यास का एहसास न रहे और मेरा लिबास मैला व बोसीदा न हुआ करे । दुआ बारगाहे खुदावन्दी में इस तरह कुबूल होती है । एक मुनादी आवाज़ लगाता है । बदीअ उद्दीन आप मेरे साथ तशरीफ़ ले चलें आपका इन्तिज़ार हो रहा है । लगातार तीन मरतबा यही सदा बुलन्द हुई । आपने हर जानिब निगाह डाली पुकारने वाला नज़र न आया । आपने मुनादी को मुख़ातिब किया ऐ पुकारने वाले ! ज़रा मेरे सामने तो आ । आपकी आंखें यह तमाशा देखती हैं कि हज़रत ख़्वाजा ख़िज़्र अलैहिस्सलात वस्सलाम आपके सामने ज़ाहिर हैं फ़रमाते हैं बदीअ उद्दीन ! आप मेरे साथ चलें । खमबात की सरज़मीन पर आज भी वह जगह चिल्लागाह हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम व चिल्लागाह सैयद बदीअ उद्दीन ज़िन्दा शाह मदार के नाम से मशहूर है । सरकार ज़िन्दा शाह मदार रज़ी अल्लाहु तआला अन्हु हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम के साथ एक मख़सूस मंज़िल की तरफ़ रवाँ दवाँ हुए । देखते हैं कि

साहिल समन्दर से लगे एक सुरंग है इसमें उतरकर उसे उबूर किया तो एक हसीन बाग़ में दाख़िल हुए बाग़ में एक खुशनुमा महल है महल में एक दालान में एक अज़ीम अर्श नूरानी ज़रदार तख़्त बिछा हुआ है जिसपर सरवरे दोआलम नूरे मुजस्सम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम रौनक अफ़रोज़ हैं । आपको सरकार की ख़िदमत में पेश कर दिया जाता है आप अपने जद्दे करीम की हुज़ूरी में इनआमाते मुहम्मदिया और इफ़ाज़ाते अहमदिया से सरफ़राज़ किये जा रहे हैं, मरातिब अलीय्या और मनासिब जलीला ख़ास्सा से मुमताज़ व मुशर्रफ़ हो रहे हैं । आफ़ताबे करमे मुस्तफ़ा जाने आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने अपने मुबारक पाक हाथों से बिहिश्ती पैराहन ज़ेबेतन कराया और नौ लुक़्मे तआमे मलकूती से खिलाए । दुर्रूल मुआरिफ़ में हज़रत गुलाम अली फ़ारूक़ी नक़्शबन्दी मुजद्दी देहलवी रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते हैं कि उसके बाद से आप मुक़ामे समदीयत पर फ़ायज़ हो गये। आपको न भूख लगती थी और न प्यास और वही एक लिबास बक़ीया पूरी ज़िन्दगी के लिए काफ़ी रहा न मैला होता था न पुराना ।

और नूरे मुजस्सम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने अपने मुबारक हाथों से आपके रूख़सार व पेशानी पर मसह फ़रमा दिया तो आपका चेहरा उसके बाद से इतना रौशन व ताबनाक हो गया कि देखने वाले ताब नहीं ला पाते । आपको देखकर देखने वाले को अल्लाह पाक याद आता और बेख़ुद होकर सजदे में गिर पड़ता इसलिए आप अपने चेहरे पर नक़ाब डाले रहते थे । हज़रत मुहद्दिस अब्दुल हक़ देहलवी रहमतुल्लाह तआला अलैह अख़बारूल अख़यार में नक़्ल फ़रमाते हैं कि (तर्जुमा फ़ारसी तहरीर) आपके जमाले जहाँ आरा पर जिसकी नज़र पड़ती वह बे इख़्तियार सजदे में गिर पड़ता और ऐसा क्यों न हो बड़ी मशहूर बात है कि वली वह है जिसे देखकर ख़ुदा याद आ जाए । चुनांचे हदीस की मशहूर किताब इब्ने माजा और तिबरानी में हज़रत सहाबिया असमा बिन्ते यज़ीद से रिवायत है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि

वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि क्या मैं तुम्हें तुम में से जो सबसे बेहतर हैं उनके बारे में न बता दूँ कि वह कौन हैं ? सहाबा ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह ज़रूर बताएं इरशाद होता है तुममें सबसे बेहतर वह हज़रात हैं जिनको देखो तो ख़ुदा याद आ जाए । हुज़ूर मदार पाक रज़ी अल्लाहु तआला अन्हु को सरकारे मदीना सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने इस हदीसे पाक की मुकम्मल तफ़सीर बना दिया । आपके चेहरए मुबारक पर इतनी तजल्लियाँ बस गई गोया आप पैकरे अनवार बन गए । आपने शुक्र बजा लाने के लिए पेशानी को सजदा में रख दिया और जब सजदए शुक्र से सर उठाया तो वहाँ अपने आपको तन्हा पाया । या वह अर्श था जिस पर रहमते तमाम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम कुछ देर पहले जलवा अफ़रोज़ थे या वह हदाया व ग़नाइम जो सरकारे रिसालत मआब सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से आपको मिले थे । अब आप मुक़ामाते आलिया मदारिया व मनासिबे मरज़ीया महबूबिया से सरफ़राज़ कर दिये गये और तबलीग़े इस्लाम आप पर लाज़िम कर दी गयी । (जारी है)

फ़ैज़ाने सिलसिलए मदारिया

तरीक़त व तसव्वुफ़ और इरशाद व सुलूक में सिलसिलए मदारिया ऐसा आफ़ताबे जहाँताब है जिसकी ज़ियापाशियों से एशिया व यूरोप में तरीक़त व तसव्वुफ़ के तमाम सलासिल और इरशाद व सुलूक के तमाम मराकिज़ बिलावास्ता या बिलवास्ता किसी न किसी तौर से फ़ैज़याब हुए बग़ैर न रह सके । अरबाबे सुलूक और अराहाबे तसव्वुफ़ ने सराहतन या ज़िमनन इसका इज़हार भी किया है । चूंकि सिलसिलए मदारिया सिर्फ़ पाँच या छः वास्तों से रहमते आलम आफ़ताबे करम हुज़ूर नबीए अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से क़रीबतर सिलसिला है और फ़ैज़ाने मुहम्मदिया और बरकाते अहमदिया का बहुत क़रीबी तक़सीमकार है । इस पर मज़ीद इनआमे ख़ास यह है कि यह शरफ़े उवैसियत से भी मुमताज़ है । इन्ही ख़सायस व इम्तियाज़ात की वजह से तरीक़त व मारफ़त की सज्जादगी पर मसनद नशीन अहले दिल अपनी कामयाबी व कामरानी की तकमील पर मुहर लगाई है और इसकी बरकात व हसनात से अपने दामने मुराद को पुर किया है । ज़ेल में उन चन्द सलासिले औलिया अल्लाह का ज़िक्र करते हैं जिन्होंने मेरी मालूमात के मुताबिक़ फ़ैज़ाने मदारियत से इस्तिफ़ादा करके अपने मन्सबे कमाल पर मोहरे तसदीक़ सब्त की है ।

सिलसिलए क़ादरिया बरकातिया पर फ़ैज़ाने मदारियत :

सिलसिलए क़ादरिया बरकातिया रज़विया के बुज़ुर्गों ने बिलवास्ता और बिला वास्ता बराहे रास्त और बतौए दीगर कई कई तरीक़ों से सिलसिलए आलिया क़ुदसिया बदीइया मदारिया का फ़ैज़ान हासिल किया है और सिलसिलए आलिया मदारिया की इजाज़त व ख़िलाफ़त से माज़ून व मुमताज़ होकर फ़ख़्र व मुबाहात का इज़हार

फ़रमाया है और अपने बुज़ुर्गों की सीरत व सवानेह की किताबों में इसका बरमला ऐलान भी फ़रमाया है ।

हज़रत शाह जमाल औलिया कुड़वी पर फ़ैज़ाने मदारियत :

हज़रत शाह जमाले औलिया कुड़वी या कोड़ा जहानाबादी रहमतुल्लाह अलैह (973हि0- 1047हि0) । आपके वालिदे मोहतरम का नामे नामी शाह अब्दुद्दीन उर्फ़ हज़रत मख़दूम जहानियां सानी बिन शाह बहा उद्दीन है (रहमहुमुल्लाह तआला) आपके वालिद बुज़ुर्गवार ने अव्वल आपको अपने सिलसिलए आलिया चिश्तिया निज़ामिया में बैअत से मुशर्रफ़ फ़रमाकर निस्बते क़ादरिया व सोहरवर्दिया से भी सरफ़राज़ी बख़्शी । वालिदे मोहतरम से अपने ख़ानदानी निस्बतों से मुमताज़ व माज़ून होने के बाद मकनपुर शरीफ़ तशरीफ़ लाकर आस्तानए कुत्बुल मदार रज़ियल्लाहु तआला अन्हु पर हाज़िरी दी । उस वक़्त हज़रत साहिबे सज्जादा मकनपुर शरीफ़ में मौजूद थे उन्होंने आपको अपना मेहमान फ़रमाया और अपने सिलसिलए मदारिया की निस्बत से मालामाल फ़रमाकर ख़िलाफ़त व इजाज़त अता फ़रमाई । (तज़किरतुल आबिदीन)

नीज़ आपने जिन मशाइख़े वक़्त से उलूमे ज़ाहिर व बातिन का इक्तिसाब किया है उनमें शैख़ क़यामुद्दीन बिन कुत्बुद्दीन बिन शैख़ उद्धन जौनपुरी (रहमतुल्लाह तआला अलैहिम अजमईन) का नाम सरे फ़ेहरिस्त है जैसा कि तज़किरा मशाइख़े क़ादरिया रज़विया सफ़ा नम्बर 311 पर दर्ज है और शैख़ क़याम उद्दीन बिन कुत्बुद्दीन (रहमतुल्लाह अलैहिमा) ने भी आपको सिलसिलए आलिया मदारिया की इजाज़त व ख़िलाफ़त से सरफ़राज़ फ़रमाया है जैसा कि हज़रत शाह सैयद अबुल हुसैन अहमद नूरी बरकाती मारहरवी रहमतुल्लाह तआला अलैह अपनी किताब ''अन्नूर वलबहा'' में अपने शजरए बदीइया मदारिया में इसका इज़हार फ़रमाते हैं,,

(तर्जुमा) ''कि यह फ़क़ीर अबुल हसन नूरी अफ़ी अन्हु कहता है कि मुझको सिलसिलए बदीइया मदारिया की इजाज़त मेरे दादा और

मुरशिद सैयद आले रसूल अहमदी कुद्दिसा सिर्रहू ने दी उन्हें हज़रत अच्छे मियां साहब से उन्हें सैयद हम्ज़ा से उन्हें सैयद आले मुहम्मद साहब से उन्हें साहिबुल बरकात मारहरवी से उन्हें सैयद शाह फ़ज़्लुल्लाह कालपवी से उन्हें अपने दादा सैयद मुहम्मद साहब से उन्हें जमालुल औलिया से उन्हें शैख़ क़याम उद्दीन से उन्हें शैख़ कुत्बुद्दीन से उन्हें शैख़ सैयद जलाल अब्दुल क़ादिर से उन्हें सैयद मुबारक से उन्हें सैयद अजमल से उन्हें आरिफ़े अकमल कामिल मुकम्मल मौलाना बदीउल हक़ वल मिल्लत वद्दीन मदार मकनपुरी रहमतुल्लाह तआला अलैह से ।"

जमाले औलिया का निस्बते उवैसिया मदारिया से मुस्तफ़ीज़ होना :

हज़रत जमाले औलिया कोड़ा जहानाबादी रहमतुल्लाह अलैहि जहाँ ज़ाहिरी निस्बतों से सरफ़राज़ व मुमताज़ थे वहीं आप बातिनी निस्बते उवैसिया मदारिया से भी मुस्तफ़ीज़ व मुस्तफ़ीद थे चुनान्चे साहिबे तज़किरा मशाइख़े क़ादरिया बयान करते हैं कि "आपने बिला वास्ता अरवाहे मुबारका सैयदना मुही उद्दीन अब्दुल क़ादिर जीलानी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु, ख़्वाजा बहा उद्दीन नक़्शबन्द और हज़रत शाह बदीअ उद्दीन कुत्बुल मदार रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से फ़ैज़े उवैसिया हासिल फ़रमाया" ।(मशाइख़े क़ादरिया रज़विया सफ़ा 310 मौलाना अब्दुल मुजतबा रज़वी)

मीर सैयद मुहम्मद तिरमिज़ी कालपवी और सिलसिलए मदारिया :

मीर सैयद मुहम्मद कालपवी कुद्दिसा सिर्रहू जो कालपी शरीफ़ की ख़ानक़ाह के बानी मुबानी हैं और सिलसिलए क़ादरिया बरकातिया के इमामों में से हैं आपको सलासिले क़ादरिया चिश्तिया व सोहरवर्दिया के साथ सिलसिलए आलिया बदीइया मदारिया का फ़ैज़ान भी अपने पीर व मुरशिद से बदरजए अतम हासिल हुआ है चुनान्चे जनाब मीर गुलाम आज़ाद बिलग्रामी कुद्दिसा सिर्रहुस्सामी

फ़रमाते हैं कि,,

(तर्जुमा) ''मीर सैयद मुहम्मद तिरमिज़ी कालपवी कुद्दिसा सिर्रहू ने दर्से निज़ामी की आख़िरी किताबें किसी क़दर मौलाना उमर जाजमवी रहमहुल्लाहु रूहहू से पढ़ी और अक्सर शैख़ जमाल कुड़वी कुद्दिसा सिर्रहू के हलक़ए दर्स में शामिल रहे और फ़ज़ीलते सौरी में बुलन्द मरतबा हासिल किया और फ़ातहए फ़राग़ हज़रत जमाले औलिया से पाया और आप ही से तरीक़ए आलिया चिश्तिया में बैअत हुए और सिलसिलए क़ादरिया व सोहरवर्दिया और सिलसिलए मदारिया में इजाज़त हासिल किया।

मौलाना गुलाम शब्बर बरकाती बदायूनी फ़रमाते हैं कि हज़रत मीर सैयद मुहम्मद, कालपवी कुद्दिसा सिर्रहू ने हज़रत जमाले औलिया कुड़वी कुद्दिसा सिर्रहू से तरीक़ए चिश्तिया में बैअत की और सलासिले क़ादरिया व सोहरवर्दिया व मदारिया में इजाज़त पायी।

(मदायह हुज़ूरे नूर मतबूआ 1334हि0 स28, आइनए कालपी स 20)

साहिबे तज़किरा मशाइख़े क़ादरिया भी यही शहादत पेश करते हुए रक़मतराज़ हैं कि आप जब हज़रत जमाले औलिया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ख़िदमते बाबरकत में कसबे इल्म के वास्ते तशरीफ़ ले गये तो आपके आली ज़र्फ़ व सलाहियत को देखते हुए अपने सिलसिलए बैअत में दाख़िल फ़रमाया और तमाम सलासिल से सरफ़राज़ जैसे क़ादरिया, चिश्तिया, सोहरवर्दिया, नक़्शबन्दिया और मदारिया की इजाज़त व ख़िलाफ़त से सरफ़राज़ फ़रमाया।

(तज़किरा मशाइख़े क़ादरिया बरकातिया रज़विया स0 316 मतबूआ अलमजमउल इस्लामी मुबारकपुर)

बुज़ुर्गाने दीन का यह तरीक़ा रहा है कि जब उनपर ख़ुदावन्दे कुद्दूस का कोई ख़ास इनआम नाज़िल होता है और किसी बुज़ुर्ग से कोई नेमते ख़ास उन्हें मिलती है तो अहालियाने नेमत में से उस नेमत को तफ़वीज़ व तक़सीम करने में कोई दरेग़ नहीं करते

। चूंकि शैख़े कामिल हज़रत शाह जमाले औलिया कुद्दिसा सिर्रहू मुख़्तलिफ़ तुरूक़ से सिलसिलए आलिया मदारिया में इजाज़त व ख़िलाफ़त के मजाज़ व माज़ून थे इसलिए निहायत ही सख़ावत और दरिया दिली के साथ आपने अपने ख़ुलफ़ा को इस सिलसिलए मुबारका की इजाज़त व ख़िलाफ़त मरहमत फ़रमाई ।

शैख़ अमीर अबुल उला अहरारी और फ़ैज़ाने सिलसिलए मदारिया:

सिलसिलएए अबुल उलाइया के सरगिरोह व सरताज शैख़ अमीर अबुल उला अहरारी रहमहुल बारी भी सिलसिलए आलिया मदारिया बदीइया की नेमत व बरकत से मुस्तफ़ीद व मुस्तफ़ीज़ थे और अपने मुन्तख़ब और मख़सूस लोगों को सिलसिलए मुबारका मदारिया की इजाज़त व ख़िलाफ़त से सरफ़राज़ फ़रमाया करते थे चुनान्चे हज़रत सैयद मुहम्मद कालपवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जब इक्तिसाबे फ़ैज़ के लिए हज़रत अमीर अबुलउला अहरारी की ख़िदमत में बइशारए बातिनी हज़रत ख़्वाजा नक़्शबन्द कुद्दिसा सिर्रहुल अज़ीज़ अकबराबाद (आगरा) पहुँचे तो कई माह हज़रत अबुलउला कुद्दिसा सिर्रहू की सोहबते बाबरकत में रहे और जब आप वापस होने लगे तो आपको हज़रत ख़्वाजा बहा उद्दीन नक़्शबन्द कुद्दिसा सिर्रहू की एक तस्बीह इनायत फ़रमाई और बैअत व ख़िलाफ़त सिलसिलए आलिया क़ादरिया, चिश्तिया, नक़्शबन्दिया, मदारिया अबुलउलाइया से सरफ़राज़ फ़रमाया । (तज़किरा मशाइख़े क़ादरिया रज़विया स० 318) (असरारे अबुल उला)

मालूम होना चाहिए कि हज़रत मीर सैयद मुहम्मद कालपवी कुद्दिसा सिर्रहुल क़वी के ख़ुलफ़ा की तादाद कम अज़ कम चौदह बयान की जाती है जो मज़कूरा सलासिले ख़म्सा के माज़ून व मजाज़ थे लेकिन उनमें ख़ुसूसियत के साथ मीर सैयद अहमद कालपवी कुद्दिसा सिर्रहू क़ाबिले ज़िक्र हैं कि आप मज़कूरा पाँच सलासिल यानी क़ादरिया, चिश्तिया, सोहरवर्दिया, नक़्शबन्दिया और

मदारिया हासिल फ़रमाकर अपने साहबज़ादे जनाब मीर सैयद फ़ज़्लुल्लाह कालपवी कुद्दिसा सिर्रहू को उनका अमीन व माज़ून क़रार देकर अपना ख़लीफ़ा व मजाज़ ठहराया और सआदतमन्द फ़रज़न्द ने अपने बाप दादा से मिली नेमतों को दूसरे ख़ानवादों में बड़ी जव्वादी सख़ावत के साथ तक़सीम फ़रमाकर अजदाद की सुन्नत को ज़िन्दा रखा ।

हज़रत सैयद शाह बरकत उल्लाह मारहरवी कुद्दिसा सिर्रहू पर फ़ैज़ाने मदारिया की बारिशः

हुज़ूर शाह बरकत उल्लाह मारहरवी कुद्दिसा सिर्रहू जिनकी ज़ाते गिरामी और नामे नामी की तरफ़ सिलसिलए बरकातिया मन्सूब है मारहरा मुतहहरा को रूहानियत की आमाजगाह और तरीक़त व तसव्वुफ़ की दर्सगाह बनाने वाली आपकी ही की ज़ाते बाबरकात है,, आपने उलूम बातिनी व सुलूक अपने वालिदे मुअज़्ज़म हज़रत सैयद शाह उवैस कुद्दिसा सिर्रहू से हासिल फ़रमाया और वालिद माजिद ने जुमला सलासिल की इजाज़त व ख़िलाफ़त मुरहमत फ़रमाकर सलासिले ख़म्सा क़ादरिया, चिश्तिया, नक्शबन्दिया, सोहरवर्दिया, मदारिया में बैअत लेने की भी इजाज़त मरहमत फ़रमाई । (तज़किरा मशाइख़े क़ादरिया बरकातिया रज़विया सफ़ा 333)

शाह फ़ज़्लुल्लाह कालपवी कुद्दिसा सिर्रहू से सिलसिलए आलिया मदारिया की इजाज़त व ख़िलाफ़तः

हज़रत शाह बरकत उल्लाह मारहरवी रहमतुल्लाहिल क़वी ने जब सैयदना शाह फ़ज़्लुल्लाह कालपवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के इल्मो हिकमत व सुलूक व मारफ़त का शोहरा सुना तो कालपी शरीफ़ जाने का रख़्ते सफ़र बांधा.............नूरुल आरिफ़ीन हज़रत सैयद शाह फ़ज़्लुल्लाह कुद्दिसा सिर्रहू की बारगाहे आली वक़ार में

पहुँचे । हज़रत की निगाह आप पर पड़ी आगे बढ़कर अपने सीने से लगाया और इरशाद फ़रमाया, दरिया व दरिया पेवस्त दरिया व दरिया पेवस्त दरिया व दरिया पेवस्त....................और चलते वक़्त इस तरह इरशाद फ़रमाया,,

(तर्जुमा) ''ऐ शाह बरकतुल्लाह ! आपकी ज़ात जुमला उमूरे सूरी व मानवी से मामूर है और आपका सुलूक इन्तिहा को पहुँचा हुआ है, आप तशरीफ़ ले जाइये और अपने घर ही क़याम फ़रमाइये, मज़ीद तालीम व तअल्लुम की आपको हाजत नहीं फिर एक दो मुक़द्दमात और बहुत ख़ास चीज़ें जो इस राह के मुअज़्ज़मात से थीं इनायत फ़रमाकर सलासिले ख़म्सा क़ादरिया, चिश्तिया, नक़्शबन्दिया, सोहरवर्दिया, मदारिया की इजाज़त मअ सनदे ख़िलाफ़त और दूसरे आमाल व अशग़ाल इनायत फ़रमाकर दो रोज़ से ज़्यादा वहाँ रहने की इजाज़त नहीं दी । (मशाइख़े क़ादरिया रज़विया सफ़ा 334)

बिरादराने मिल्लते इस्लामिया ! आपको मालूम होना चाहिए कि सैयद शाह बरकत उल्लाह मारहरवी कुद्दिसा सिर्रहू से सलासिले ख़मसा क़ादरिया, चिश्तिया, नक़्शबन्दिया, सोहरवर्दिया और मदारिया की इजाज़त व ख़िलाफ़त मुन्तक़िल होकर सैयद आले मुहम्मद मारहरवी कुद्दिसा सिर्रहू को और उनसे हज़रत सैयद अच्छे मियाँ मारहरवी कुद्दिसा सिर्रहू को और उनसे हज़रत सैयद आले रसूल अहमदी कुद्दिसा सिर्रहू को और उनसे हज़रत सैयद शाह अबुल हुसैन अहमद नूरी मियाँ कुद्दिसा सिर्रहुल अज़ीज़ को पहुँचती है । मज़ीद तफ़सील के लिए ज़ेल की किताबों का मुतालआ करें । मआसिरुल किराम, असहुत्तवारीख़, काशिफ़ुल अस्तार, नूरे मदायह हुज़ूर, ख़ान्दाने बरकात, बरकाते मारहरा वग़ैरह ।

हज़रत नूरी मियाँ कुद्दिसा सिर्रहू को सिलसिलए मदारिया की इजाज़त व ख़िलाफ़त :

हुज़ूर सैयदना शाह अबुल हुसैन अहमद नूरी मारहरवी कुद्दिसा सिर्रहू की वह ज़ाते गिरामी है जिनसे मुफ़्ती अहमद रज़ा ख़ाँ फ़ाज़िल बरेलवी ने तमाम सलासिले हक़्क़ा बरगज़ीदा की

इजाज़त व ख़िलाफ़त हासिल करके आलमे इस्लाम में उनकी इशाअत व तशहीर फ़रमाई है और यह एलान भी फ़रमाया है कि यह वह सलासिल हैं जो मुझे महबूब व दिलपसन्द हैं । हुज़ूर नूरी मियाँ कुद्दिसा सिर्रहू को ख़िलाफ़त व इजाज़त अपने शैख़े तरीक़त हज़रत सैयद शाह आले रसूल मारहरवी कुद्दिसा सिर्रहुल अज़ीज़ से थी चुनान्चे राहे मारफ़त की तकमील के बाद आपको इजाज़ते आम मुरहमत फ़रमाई और जिस सनद को आपके शैख़े तरीक़त ने अता फ़रमाया था वह यह है,, (तर्जुमा)
यानी अल्लाह बस है और उसके सिवा कोई नहीं
अल्लाह के नाम से शुरू जो बड़ा मेहरबान रहमत वाला है
हज़रत जनाब सैयद आले रसूल अहमदी फ़रमाते हैं कि नूरे निगाह सुरूरे क़ल्ब व सीना मेरी आंखों की ठंडक और मेरे दिल के क़रार सैयद अबुल हुसैन अहमद नूरी मियां साहब तुव्वेला उमरूहू व ज़ैद कुदरूहू, को पांचों सलासिल यानी क़ादरिया, चिश्तिया, नक़्शबन्दिया, सोहरवर्दिया और मदारिया क़दीमा व जदीदा और सिलसिलए क़ादरिया रज़्ज़ाक़िया और अलविया मनामिया की इजाज़त व ख़िलाफ़त और ख़ानदाने बरकातिया के मामूला तमाम अज़कार व अशग़ाल और औराद व वज़ायफ़ की इजाज़त बिऐनिही उसी तरह दे रहा हूँ जिस तरह मेरे चचा मुर्शिदी व मौलाई हज़रत सैयद शाह अबुल फ़ज़्ल आले अहमद अच्छे मियां साहब अनारुल्लाह बुरहानहू से और मेरे वालिद माजिद हज़रत सैयद आले बरकात उर्फ़ सुथरे मियां नव्वरल्लाहु मरक़दहू से मुझे पहुँची है और मौसूफ़ को मैं अपना ख़लीफ़ा मजाज़ व माज़ून क़रार देता हूँ जो शख़्स बैअत का इरादा ज़ाहिर करे और मुरीद होना चाहे उसको यह सिलसिलए आलिया में दाख़िल फ़रमाकर मुरीद करें और उसकी सलाहियत के मुताबिक़ ख़ानदानी ज़िक्र व शग़्ल और विर्द का हुक्म दें । अल्लाह सुब्हानहु तआला से दुआ है कि मौसूफ़ को इस तरीक़े के बुज़ुर्गों के रास्ते पर गामज़न फ़रमाये । अल्लाह तआला ही से मदद दरकार है और उसी पर भरोसा है ।

हुज़ूर सैयदना शाह अबुल हुसैन अहमद नूरी मियां कुद्दिसा

सिर्रहू को उनके आबा व अजदाद से जो फुयूज़ व बरकात हासिल हुए हैं वह अपनी जगह ख़ास हैं लेकिन बारगाहे कुत्बुल मदार सैयदना सैयद बदीअ उद्दीन ज़िन्दा शाह मदार रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से आप पर बड़ी मख़सूस करमफ़रमाइयाँ हुई हैं। मरातिब व मनासिब की बशारतों से नवाज़ा गया है और ख़ुसूसियत के साथ ओहदए कुत्बियत से आपको सरफ़राज़ किया गया है चुनान्चे साहिबे तज़किरा मशाइख़े बरकातिया आपकी अज़मते शान को ज़ाहिर करते हुए रक़मतराज़ हैं कि,, आप अक़ताबे सबआ में से एक कुत्ब हैं जिनकी बशारत हज़रत शाह बूअली क़लन्दर पानीपती और हज़रत शाह बदीअ उद्दीन कुत्बुल मदार रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने दी है और यही इस सिलसिलए बशारत के ख़ातिम हैं,,(तज़किरा मशाइख़े क़ादरिया बरकातिया सफ़ा 381 बहवाला तज़किरए नूरी सफ़ा 55-56)

ग़ालिबन इसी करम नवाज़ी की वजह से हज़रत नूरी मियां कुद्दिसा सिर्रहू ने कुत्बुल मदार सैयदी ज़िन्दा शाह मदार रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की मुहब्बत व इनायत में डूब कर आशिक़ाने कुत्बे मदार के वज़ीफ़े के लिए "सलाते मदारिया" नाम की एक किताब लिखी है जिसमें हज़रत सैयद बदीअ उद्दीन कुत्बे मदार रज़ियल्लाहु अन्हु के असमाए हुस्ना 99 सैग़ों के साथ दर्ज हैं । (तज़किरा मशाइख़ 386)

हज़रत नूरी मियाँ का शजरए मदारिया :

आपका शजरए मदारिया बदीइया जिसको आपने अपनी किताब अन्नूरू वलबहा में ख़ुद रक़म फ़रमाया है, इस तरह है,, अम्मांबाद फ़यक़ूलुल फ़क़ीर अबुल हुसैन नूरी अफ़ी अन्हु, अजाज़नी बिस्सिलसिलतिल बदीइयतिल मदारिय जद्दी व मुरशिदी अलसैयद आले रसूलिल अहमदी कुद्दिसा सिर्रहू अनिल हज़रत अच्छे मियां साहब अनिस्सैयद हम्ज़ा अनिस्सैयद आले मुहम्मद साहब अन साहिबिल बरकात अलमारहरवी अनिस्सैयद अश्शाह फ़ज़्लुल्लाह कालपवी अन अबीहि अस्सैयद अहमद अन जद्देहि अस्सैयद मुहम्मद साहब अन जमालिल औलिया अनिश्शैख़ क़याम उद्दीन अनिश्शैख़

कुत्बुदीन अनिश्शैख़ अस्सैयद जलाल अब्दिल क़ादिर अनिस्सैयद मुबारक अनिस्सैयद अजमल अबिल आरिफ़िल अक्मलिल कामिलिल मुकम्मल अलमौलाना बदीउल हक़ वलमिल्लत वदीन कुत्बिलमदारु मकनपुरी रहमतुल्लाह तआला अलैह अन अब्दिल्लाह अश्शामी अनिश्शैख़ अब्दिल अव्वल अनिश्शैख़ अमीन उद्दीन अन अमीरुल मोमिनीन मुर्तज़ा अली कर्रमल्लाहु वजहहुल करीम अन सैय्यदुल मुरसलीन मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ।
(अन्नूर वलबहा फ़ी असानीदिल हदीस व सलासिलिल औलिया सफ़ा 72 शैख़ सैयद अबुल हुसैन अहमद नूरी मारहरवी)

सैयदुल उलमा आले मुस्तफ़ा अलैहिर्रहमह और सिलसिलए मदारिया :

जनाब अबुल हसनैन आले मुस्तफ़ा सैयद मियाँ बरकाती नूरी अलैहिर्रहमह जो सैयदुल उलमा के लक़ब से मशहूर हैं उलमाए अहले सुन्नत और सालिकाने रहे मारफ़त में एक मख़सूस मुक़ाम रखते हैं । मारहरा मुतहहरा और ख़ानदाने बरकातिया के चश्म व चराग़ होने के नाते उस दौर में जमाअते अहलेसुन्नत में आपको बड़ी पिज़ीराई हासिल थी । सिलसिलए आलिया बदीइया मदारिया के इजराए फ़ैज़ से मुतअल्लिक़ कुछ बातें ग़लत तौर से आपकी ज़ात से मन्सूब कर दी गई जिनकी सफ़ाई और वज़ाहत के लिए 9 दिसम्बर 1941ई0 को एक तवील मकतूब आल इण्डिया सुन्नी जमीअतुल उलमा के लेटरपैड पर ख़ानक़ाहे आलिया मदारिया मकनपुर शरीफ़ के एक बुर्जुग के नाम आपने इरसाल फ़रमाया जो आज भी अपनी असली हालत में साहिबे सज्जादा अलहाज सैयद ज़ुलफ़िक़ार अली क़मर मदारी मदाज़िल्लहुल आली के पास मौजूद है और नाचीज़ मुवल्लिफ़ के पास उसकी फ़ोटो कापी मौजूद है । मदार बुक डिपो मकनपुर शरीफ़ ने इस मकतूब को फ़ोटो कापी के साथ जुलाई 2003ई0 में शाए कर दिया है । ज़ैल में उसके कुछ इक़्तिबासात रक़म किये जा रहे हैं जिन्हें पढ़कर सुन्नी उलमा और अवाम को यह अन्दाज़ा होगा कि सिलसिलए मदारिया को कैसे

कैसे बुर्जुर्गों ने अपने सर का ताज बनाया है और इस सिलसिलए मुबारका के ख़िलाफ़ हिरज़ा सराई करने वाले लोग किस क़दर नादान, जाहिल और बेवकूफ़ हैं जो इस सिलसिलए मुबारका के फुयूज़ व बरकात के इजरा का इंकार करके मारहरा मुतहहरा के तमाम बुर्जुर्गों की तौहीन व तन्क़ीस करते हैं। जो उनके ईमान व अक़ीदा के लिए ज़हरे क़ातिल है और अल्लाह तआला से जंग मोल लेने की सर्टिफ़िकेट है । वलअयाज़ बिल्लाह।

मुलाहिज़ा हो हुज़ूर सैयदुल उलमा अलैहिर्रहमह के मकतूब का इक्तिबास, आप फ़रमाते हैं,,

"आप तो अच्छी तरह जानते हैं ख़ानक़ाहे आलिया क़ादरिया बरकातिया मारहरा मुतहहरा तीन सदियों से नामूसे औलियाए किराम अलैहिमुर्रहमतु वर्रिज़वान के लिए अपनी सारी कूव्वतें और ताक़तें बाज़ी पर लगाए हुए है तो फिर इस ख़ानक़ाह शरीफ़ के एक हक़ीर ख़ादिम की हैसियत से क्योंकर मुतसव्विर था कि वह अपने एक मुरशिदे इजाज़त ज़ाते बरगुज़ीदा सिफ़ात हुज़ूर पुरनूर सैयदना कुत्बुल मदार रज़ियल्लाहु तआला अन्हु व अरज़ाहु अन्ना की बारगाहे फ़ज़ीलत पनाह में ज़बाने गुस्ताख़ाना दराज़ करता, ऐ सुब्हानल्लाह ! क्या मैं इतना अहमक़ था कि जिस शाख़ पर बैठा था उसी पर कुल्हाड़ी चलाता । सिलसिलए आलिया मदारिया के इजराए फ़ैज़ का इंकार क्या ख़ुद मेरे जद्दे अकरम सैयद शाह बरकत उल्लाह कुद्दिसा सिर्रहुल अज़ीज़ की मआज़ अल्लाह तजहील व तहमीक़ के मुतरादिफ़ न होता।

(मकतूब सैयदुल उलमा स० 3)

मेरे जद्दे आला हज़रत साहिबुल बरकात सैयद शाह बरकतुल्लाहिल बिलग्रामी वल मारहरवी अलैहिर्रहमह कालपी शरीफ़ से सिलसिलए आलिया मदारिया लाए और फ़क़ीर को जिस तरह सलासिले आलियात चिश्तिया व सोहरवर्दिया व नक़्शबन्दिया की इजाज़त व ख़िलाफ़त है इस सिलसिलए मुबारका की भी इजाज़त व ख़िलाफ़त है । (मकतूब सफ़ा 2) । आप बफ़ज़्लिही तआला अहले इल्म हैं अच्छी तरह जानते हैं कि ऐसे कलाम अजिल्ला

बुर्जुगाने एज़ाम रिज़वानुल्लाहि तआला अलैहिम अजमईन के व्हे गये, मिसालन अर्ज़ करता हूँ मुहद्दिसीन ने इत्तिफ़ाक़ किया कि सैयदना अमीरूल मोमिनीन मौलाए कायनात सैयदना मुर्तज़ा अली कर्रमल्लाहु तआला वजहहुल करीम से हुज़ूर अहसनुत्तबिईन सैयदना इमाम हसन बसरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को लिक़ा व सोहबत हासिल न थी । दूसरे गिरोह ने इसका रद्द किया "और सैयदना इमाम को हुज़ूर अमीरूल मोमिनीन से ख़िरक़ए ख़िलाफ़त साबित किया । सिलसिलए नक़्शबन्दिया सिद्दीक़िया के सिलसिले में फिर मुहद्दिसीन ने कलाम किया कि सैयदना इमाम क़ासिम बिन मुहम्मद अमीरूल मोमिनीन सैयदना सिद्दीक़ अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को हुज़ूर सैयदना सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से बैअत व ख़िलाफ़त न थी फिर आगे चलकर हज़रत सैयदना अबुल हसन ख़िरक़ानी और हज़रत सैयदना बायज़ीद बुस्तामी रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा के दरमियान सौ बरस का ज़माना साबित करते हुए बाहमी लिक़ा व सोहबत का इंकार किया इसी तरह हज़रत सैयदना अली अहमद मख़दूम साबिर पाक और हज़रत सैयदना कुत्बे जमाल हांसवी का बाहमी मुक़ाबला भी रिवायतों में मज़कूर है इरशाद फ़रमाया जाए क्या बरसबीले तज़किरा इन रिवायतों में से किसी का बयान करने वाला इन सलासिले आलिया का मुनकिर क़रार दिया जायेगा ? क्या यह सारे सलासिले आलिया मआज़ल्लाह सोख़्त व महरूमुल फ़ैज़ हो गये हैं हाशा व कल्ला हरगिज़ नहीं तो फिर इंसाफ़ फ़रमाइये कि फ़क़ीर के इस इक़रार के बावजूद कि मेरे ख़ानदाने बावक़ार के पास सिलसिलए मदारिया की इजाज़त मौजूद है जो कालपी शरीफ़ से आई है और खुद फ़क़ीर को इजाज़त है मुझपर सिलसिलए आलिया के सिरे से सोख़्त होने के अक़ीदे का इलज़ाम बोहतान है या नहीं ? लिहाज़ा फ़क़ीर का मसलक समाअत फ़रमाइये कि यह फ़क़ीर ख़ाकेपाए मुरशिदाने एज़ाम हुज़ूर पुरनूर सैयदना बदीउल मिल्लत वश्शरीअत वत्तरीक़त वल इस्लाम वद्दीन शैख़ुना व मुरशदुना सैयदी कुत्बुल मदार ज़िन्दा शाह मदार रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को

अपना वैसा ही मुरशिदे इजाज़त मुफ़ीज़ व मुफ़ीद यक़ीन करता है जैसा कि ख़्वाजए ख़्वाजगान सुलतानुल हिन्द वलीउल हिन्द अताउर्रसूल सैयदना ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ चिश्ती अजमेरी व हज़रत ख़्वाजा बहाउल मिल्लत वद्दीन सैयदना मौलाए नक़्शबन्द व सैयदना शैख़ुश्शयूख़ शहाबुल मिल्लत वद्दीन उमर सोहरवर्दी रिज़वानुल्लाह तआला अजमईन को । (मकतूब सैयदुल उलमा स० 3, 4)

मारहरा मुतहहरा में बफ़ज़्लिही तआला मदारी गद्दी सदियों से क़ायम है और फ़क़ीर के बुर्ज़ुगाने किराम हमेशा से उसकी ख़िदमत करते चले आए । मेरे जद्दे करीम हुज़ूर शम्सुल मिल्लत वद्दीन सैयदना आले अहमद अच्छे मियाँ कुद्दिसा सिर्रहुल अज़ीज़ ने अपने अह्दे मुबारक में सरकार मदारुल आलमीन के नामे नामी से मन्सूब मेला क़ायम कराया जो 9 जमादिल ऊला को बराबर होता है और उस दिन जब गद्दी नशीन अपना जुलूस लेकर दरगाहे बरकातिया पर हाज़िरी देते हैं तो वक़्त का साहिबे सज्जादा दरगाह शरीफ़ के दरवाज़े पर ख़ैरमक़्दम करता है और उनको फ़ातहे के लिए ले जाता है फिर हवेली सज्जादा नशीनी पर आते हैं और फ़ातहा का तबर्रुक सज्जादा बरकातिया को देते हैं और साहिबे सज्जादए बरकातिया गद्दी नशीन को दरगाहे बरकातिया की तरफ़ से हदया के तौर पर एक रूमाल और सवा रुपया नज़्र देते हैं, यह नज़्र मेरी दरगाह कमेटी के बजट में सालाना पास होती है और वक़्फ़ बोर्ड के नविश्ते में आती है । मौजूदा गद्दी नशीन मियां दीदार अली शाह साहब फ़क़ीर के बड़े अच्छे दोस्त हैं और बाहमी रूहानी रिश्ते उनके और फ़क़ीर के दरमियान भी क़ायम हैं । दरगाह शरीफ़ के मकतब की मन्ज़ूर शुदा छुट्टियों में मेला शाह मदार अलैहिर्रहमह की छुट्टी भी है । इस रोज़ असातज़ए मकतब बच्चों को मेला शाह मदार की तहनियत ख़ुशनुमा काग़ज़ों पर देते हैं और बच्चे अपने उस्तादों की ख़िदमत ज़रे नक़्द से करते हैं, यह रक़म "मदारी" कहलाती है । फ़क़ीर के ख़ानदान में मख़्तूबा लड़कियों को उनके होने वाले शौहरों के घरों से 9 जमादिल ऊला

मदार अलैहिर्रहमह के उर्से विसाल की इस तरह याद मनाई जाती है । यह सारी चीज़ें सदियों से मुझसे और मेरे सिलसिले से वाबस्ता हैं और फिर मुझपर सिलसिलए आलिया के सोख़्त समझने का इलज़ाम ? मआज़ल्लाह मआज़ल्लाह ।। (मकतूब सैयदुल उलमा सफा 5) मुझे बड़ा अफ़सोस है कि बात पहुँचाने वालों ने मेरा यह सरीह बयान,, कि ख़ुद मुझको सिलसिलए आलिया मदारिया में इजाज़त व ख़िलाफ़त है,, आप हज़रात तक क्यों नहीं पहुँचाया, क्या किसी सोख़्त सिलसिले में भी इजाज़त व ख़िलाफ़त होती है ? तौबा मआज़ल्लाह (मकतूब स0 6)

आख़िर में जनाब की इत्तिलाअ के लिए अपना शजरए आलिया मदारिया लिख रहा हूँ जो मैंने अपनी ख़ानदानी किताबे असनाद अन्नूरू वलबहा फ़ी असानीदिल हदीस व सलासिलिल औलिया मुसन्निफ़ा जद्दे करीम हज़रत सैयदना शाह अबुल हुसैन अहमद नूरी कुद्दिसा सिर्रहुल अज़ीज़ से नक़्ल किया है, मुलाहिज़ा हो,, बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम,, अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन वस्सलातु वस्सलामु अला रसूलिही व अला आलिही व सहबिही अजमईन, अम्माबाद ! फ़यकूलुल फ़क़ीर अबुल हुसैन अफ़ी अन्हु अजाज़नी बिस्सिलसिलतिल बदीइयतिल मदारियति जद्दी व मुर्शिदी अस्सैयद आले रसूलिल अहमदी कुद्दिसा सिर्रहू अनिल हज़रत अच्छे मियाँ साहब अन अबीहि अन जद्दहू अन साहिबिल बरकात अनिस्सैयद फ़ज़्लुल्लाह अन अबीहि अन जद्दिही अन जमालिल औलिया अनिश्शैख़ क़याम उद्दीन अनिश्शैख़ कुत्बुद्दीन अनिस्सैयद जलाल अब्दिल क़ादिर अनिस्सैयद मुबारक अनिस्सैयद अजमल अनिल आरिफ़िल अजल्ल कामिलिल अकमल मौलाना बदीउल हक़ वद्दीन अलमदार मकनपूरी रहमतुल्लाह तआला अलैह अन अब्दुल्लाहुश्शामी अनिश्शैख़ अब्दुल अव्वल अन अमीन उद्दीन अन अमीरुल मोमिनीन मुर्तज़ा अली कर्रमल्लाहु वजहहुल करीम अन सैयदुल मुरसलीन मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम । (मकतूब स0 7)

हज़रत अहसनुल उलमा और सिलसिलए मदारियाः

अहसनुल उलमा हज़रत सैयद शाह मुस्तफ़ा हैदर हसन मियां मारहरवी कुद्दिसा सिर्रहू (1345हि0-1416हि0) ने सिलसिलए क़ादरिया बरकातिया की तरवीज व इशाअत में नुमायां किरदार अदा किया है । आपने इस्लाम व सुन्नियत के फ़रोग़ के लिए अपनी पूरी ज़िन्दगी वक्फ़ कर रखी थी । हज़ारों उलमा व सूफ़िया आपके खुलफ़ा व मुरीदीन के जुमरे में दाख़िल हुए और आपके हसनात व बरकात से मुस्तफ़ीद व मुस्तफ़ीज़ हुए । आपको जहाँ और दूसरे सलासिल की इजाज़त व ख़िलाफ़त हासिल थी सिलसिलए मदारिया जदीदा व क़दीमा में भी माज़ून व मजाज़ थे। ताजुल उलमा जनाब सैयद शाह मुहम्मद मियाँ क़ादरी बरकाती कुद्दिसा सिर्रहू और आपके वालिद माजिद ने आपको इजाज़त व ख़िलाफ़त से नवाज़ा । आप (मुहम्मद मियां साहब) फ़रमाते हैं मैंने बरखुरदार नूरूल अबसार सैयद हाफ़िज़ मुस्तफ़ा हैदर हसन मियां सल्लमहुल्लाह तआला को जुमला सलासिले ख़ानदानी क़दीमा व जदीदा क़ादरिया व चिश्तिय व सोहरवर्दिया व नक्शबन्दिया व बदीइया मदारिया व मनामिया अलविया व उवैसिया जलीला व बरकातिया व मुनव्वरिया व रज़्ज़ाक़िया व आले रसूलिया की व नीज़ जुमला आमाल व औराद व अज़कार व अशग़ाल व औफ़ाक़ ....व दीगर अदइयए ख़ानदानी की उन सब तरीक़ों से जो फ़क़ीरे हक़ीर को अपने हज़रत मुरशिदे बरहक़ इमामुल मुरशिदीन क़िब्ला व काबा वालिद माजिद और अपने हज़रत नाना साहब नूरूल आरिफ़ीन क़िब्ला सैयद शाह अबुल हुसैन अहमद नूरी मियां साहब और हज़रत इमामे अहलेसुन्नत मौलाना अहमद रज़ा ख़ाँ साहब क़द्दसत असरारहुमुल अज़ीज़ से बफ़ज़्लिही तआला हासिल हैं इजाज़त नामा व ख़िलाफ़ते आम्मा व ख़ास्सा दी और इन सब सलासिल में बैअत लेने का मजाज़ व माज़ून किया । (बयाद हज़रत अहसनुल उलमा सैयद शाह मुस्तफ़ा हैदर हसन मियां कुद्दिसा सिर्रहू, अहलेसुन्नत

की आवाज़, सफ़ा 193-194, ख़ानक़ाहे बरकातिया, मारहरा शरीफ का तर्जुमान, ख़ुसूसी शुमार)

आपके महज़रे सज्जादगी की नक़्ल में हज़रत मुहम्मद मियां क़ादरी बरकाती कुद्दिसा सिर्रहू का फ़रमान इस तरह नक़्ल है,,

"आज से अज़ीज़ मौसूफ़ (सैयद मुस्तफ़ा हैदर हसन मियां क़ादरी बरकाती) सल्लमहुल्लाह तआला मेरी तरह हज़रत सैयदी मुर्शिदी व वालिदी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के और ख़ुद मेरे सज्जादा नशीन हैं और हज़रत सैयदी व मुर्शिदी व वालिदी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से अज़ीज़ मौसूफ़ सल्लमहुल्लाहु तआला को बैअत व इजाज़त व ख़िलाफ़त सिलसिलए आलिया क़ादरिया व दीगर सलासिले बरकातिया से हासिल है नीज़ इस फ़क़ीर ने भी उनको जुमला सलासिले आलिया क़ादरिया व चिश्तिया व सोहरवर्दिया व नक़्शबन्दिया व बदीइया मदारिया जदीदा व क़दीमा व जुमला औफ़ाक़ व आमाल व औराद व अज़्कार व दीगर बरकात हज़राते अकाबिरे किराम बरकातिया क़द्दसत असरारहुम की इजाज़त व ख़िलाफ़ते आम्मा व ख़ास्सा अबसे पेशतर दे दी और उसका वसीक़ा अलाहिदा तहरीर करके दे दिया है..................फ़क़ीर औलादे रसूल मुहम्मद मियां क़ादरी बरकाती क़ासमी, ख़ादिमे सज्जादा ग़ौसिया बरकातिया आले अहमदया मारहरा मुतहहरा, ब क़लमख़ुद (अहलेसुन्नत की आवाज़ सफ़ा 195-196)

मुफ़्ती अहमद रज़ा ख़ाँ और सिलसिलए मदारिया :

फ़ाज़िल बरेलवी की ज़ात दौरे हाज़िरा के उलमा के लिए मोहताजे तअर्रुफ़ नहीं है यह सिलसिलए रज़विया के इमाम और बानी हैं। उन को मशाइख़े तरीक़त के कम अज़ कम तेरह सिलसिलों में इजाज़त व ख़िलाफ़त हासिल थी और उन सलासिल में दूसरों को भी इजाज़त व ख़िलाफ़त देने के माज़ून व मजाज़ थे जैसा कि उनकी किताब अलइजाज़तुल मतीना की इबारत से ज़ाहिर है,, उनको जिन सलासिले तरीक़त में इजाज़त व ख़िलाफ़त हासिल

थी उसकी तफ़सील इस तरह है (1) क़ादरिया बरकातिया जदीदा (2) क़ादरिया आबाइया क़दीमा (3) क़ादरिया अहदाया (4) क़ादरिया रज़्ज़ाक़िया (5) क़ादरिया मन्सूरिया (6) चिश्तिया निज़ामिया क़दीमा (7) चिश्तिया महबूबिया जदीदा (8) सोहरवर्दिया वाहिदिया (9) सोहरवर्दिया फुज़ैलिया (10) नक़्शबन्दिया उलाइया सिद्दीक़िया (11) नक़्शबन्दिया उलाइया अलविया (12) बदीइया (13) अलविया मनामिया वग़ैरह वग़ैरह । (मशाइख़े क़ादरिया रज़विया सफ़ा 399)

वाज़ेह हो कि बारह नम्बर का सिलसिलए बदीइया आलिया बदीइया मदारिया ही है जैसा कि सिलसिलए बरकातिया के बुर्ज़ुगों की तहरीरों से ज़ाहिर है । सिलसिलए मदारिया की इजाज़त व ख़िलाफ़त का ज़िक्र वह अपनी किताब अलइजाज़तुल मतीना में इस तरह करते हैं।,,

फ़ाज़िल बरेलवी को सिलसिलए मदारिया की ख़िलाफ़त व इजाज़तः

(तर्जुमा) '' तरीक़त के उन तमाम दिलपसन्द सिलसिलों की भी इजाज़त देता हूँ जिनकी मुझे इजाज़त हासिल है । जिनमें किसी को अपना क़ायम मुक़ाम, जानशीन करने का साहिबे ख़िलाफ़त के इरशाद के मुताबिक़ मैं माज़ून हूँ वह सलासिले तरीक़त यह हैं,,

1. तरीक़ए आलिया क़ादरिया बरकातिया जदीदा इला अन्ना क़ाला
12. सिलसिलए बदीइया ।

अलइजाज़ातुल मतीनालि उलमाए बमक्कता वल मदीना (उलमाए हरमैन के लिए इजाज़त नामे) तसनीफ़ मौलाना मुहम्मद अहमद रज़ा ख़ाँ बरेलवी, मुतरजिम, अल्लामा मुहम्मद एहसानुल हक़ क़ादरी रज़वी लायलपुर, सफ़ा 82, 83 मतबूआ रज़ा एकेडमी, मुम्बई ।

मैंने इन्हें तरीक़त के उन तमाम सिलसिलों की भी इजाज़त दी जिनकी मुझे इजाज़त है (1) तरीक़ए आलिया क़ादरिया बरकातिया जदीदा (15) सिलसिलए बदीइया । सफ़ा 36, 39

मैं इन्हें तरीक़त के उन तमाम सिलसिलों की भी इजाज़त

देता हूं जिनकी मुझे इजाज़त है और ख़लीफ़ा बनाने का इज़्न है वह सिलसिले तरीक़त यह हैं 1. तरीक़ए आलिया क़ादरिया बरकातिया जदीदा 2. क़ादरिया आबाइया क़दीमा 3. क़ादरिया अहदाया 4. क़ादरिया रज़्ज़ाक़िया 5. कादरिया मुनव्वरिया 6. चिश्तिया निज़ामिया क़दीमा 7. चिश्तिया जदीदा 8. सोहरवर्दिया वाहिदिया 9. सोहरवर्दिया फ़ुज़ैलिया 10. नक़्शबन्दिया उलाइया (जो हज़रत सैयद करीम अकबराबादी की तरफ़ मन्सूब है) 11. सिलसिलए बदीइया 12. अलविया मनामिया।

अलइजाज़ातुल मतीना सफ़ा 100/101

मुफ़्तीए आज़म पर सिलसिलए मदारिया का फ़ैज़ान :

मौलाना मुहम्मद मुस्तफ़ा रज़ा ख़ाँ नूरी बरेलवी तो मुफ़्ती आज़मे हिन्द के लक़ब से मशहूर हैं । सिलसिलए रज़विया में उनका मुक़ाम भी बड़ा ऊँचा है फ़ाज़िले बरेलवी के शहज़ादे होने की वजह से वह इस सिलसिले में अपने दौर में मरकज़े अक़ीदत बने रहे । हिन्द व पाक के हज़ारों लोग उनके दामन से वाबस्ता हैं । शैख़े तरीक़त हज़रत सैयद शाह अबुलहुसैन अहमद नूरी मारहरवी उनके शैख़े तरीक़त ने बैअत करने के बाद जुमला सलासिल मसलन क़ादरिया चिश्तिया नक़्शबन्दिया सोहरवर्दिया मदारिया वग़ैरह की इजाज़त से भी नवाज़ा । अपने शैख़े तरीक़त के अलावा वालिद माजिद मौलाना अहमद रज़ा ख़ाँ फ़ाज़िल बरेलवी से भी ख़िलाफ़त व इजाज़त हासिल की।(तज़किरए मशाइख़े क़ादरिया बरकातिया रज़विया स.507, मुसदक़ा मौलाना अख़्तर रज़ा ख़ाँ साहब अज़हरी बरेलवी)

अल्हम्दु लिल्लाह रोज़े रौशन की तरह आशकारा दलायल व बराहीन से यह बात वाज़ेह है कि हज़रत सैयद जमाले औलिया कोड़ा जहानाबादी अलैहिर्रहमह से लेकर मौलाना सैयद हसन मियां साहब मारहरवी कुद्दिसा सिर्रहू तक और फ़ाज़िले बरेलवी से मुफ़्तीए

सारी है । सबने इस सिलसिलए मुबारका को ज़ाहिरी या रुहानी बिलवास्ता या बिला वास्ता से हासिल किया है और इन सभी बुर्जुगों के लिए यह सिलसिला सरमायए फ़ख़्र व इफ़्तिख़ार है । किसी को हुज़ूर कुत्बुल मदार ज़िन्दा शाह मदार रज़ियल्लाहु तआला अन्हु शरफ़े उवैसियत से मुमताज़ फ़रमा रहे हैं तो किसी को कुत्बियत की बशारत दे रहे हैं किसी को अपने रुश्दी सिलसिलए मुबारका से नवाज़ रहे हैं तो किसी को अपनी नस्बी और रुहानी औलाद के वास्ते से फ़ैज़याब फ़रमा रहे हैं । यह सभी बुर्जुग सिलसिलए मदारिया के मरहूने मिन्नत और एहसानमन्द हैं । इन सारे बुर्जुगों के नज़दीक सिलसिलए आलिया मदारिया महबूब व दिलपसन्द और सरताज व सरफ़राज़ है । सिलसिलए रज़विया के जाहिल नावाक़िफ़ और हक़ायक़ से नाआशना लोग सिलसिलए आलिया मदारिया बदीइया को सोख़्त व मुनक़तअ बताकर उन बरकाती रज़वी बुर्जुगों की सख़्त तौहीन कर रहे हैं और अपनी आक़बत भी ख़राब कर रहे हैं अल्लाह तआला उन्हें हिदायत दे ।

इन लोगों को इबरत हासिल करने के लिए हुज़ूर सैयदुल उलमा आले मुस्तफ़ा मारहरवी अलैहिर्रहमह के यह फ़रामीन हमेशा ज़हन में रखना चाहिए कि,,

(1) मेरे जद्दे आला सैयद शाह बरकत उल्लाह बिलग्रामी मारहरवी अलैहिर्रहमह कालपी शरीफ़ से सिलसिलए आलिया मदारिया लाए और फ़क़ीर को जिस तरह सलासिले आलियात चिश्तिया व सोहरवर्दिया व नक्शबन्दिया की इजाज़त व ख़िलाफ़त है इस सिलसिलए मुबारका की भी इजाज़त व ख़िलाफ़त है ।

2. सिलसिलए आलिया मदारिया के इजराए फ़ैज़ का इंकार क्या ख़ुद मेरे जद्दे अकरम सैयद शाह बरकत उल्लाह कुद्दिसा सिर्रहुल अज़ीज़ की मआज़ल्लाह तजहील व तहमीक़ के मुतरादिफ़ न होता ।

3. मेरे ख़ानदाने वाबक़ार के पास सिलसिलए मदारिया की इजाज़त मौजूद है जो कालपी शरीफ़ से आई और ख़ुद फ़क़ीर को इजाज़त है ।

4. फ़कीर का मसलक समाअत फ़रमाइये कि यह फ़कीर ख़ाकं पाए मुर्शिदाने एज़ाम हुज़ूर पुरनूर सैयदना बदीउल मिल्लत वल शरीअत वत्तरीक़त वल इस्लाम वद्दीन शैख़ेना व मुरशदुना सैयदी कुत्बुल मदार ज़िन्दा शाह मदार रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को अपना वैसा ही मुरशिदे इजाज़त मुफ़ीद व मुफ़ीज़ यकीन करता है जैसा कि ख़्वाजए ख़्वाजगाँ सुलतानुल हिन्द वलीउल हिन्द अताउर्रसूल सैयदना ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ चिश्ती अजमेरी व हज़रत ख़्वाजा बहाउल मिल्लत वद्दीन सैयदना मौलाए नक़्शबन्द व सैयदना शैख़ुल शुयूख़ शहाब उद्दीन उमर सोहरवर्दी रिज़वानुल्लाह तआला अलैहिम अजमईन को ।

5. ख़ुद मुझको सिलसिलए आलिया मदारिया में इजाज़त व ख़िलाफ़त है । क्या किसी सोख़्त सिलसिले में इजाज़त व ख़िलाफ़त होती है ।

. राक़िमुल हुरूफ़ अबुल हम्माद मुहम्मद इसराफ़ील हबीबी यह उम्मीद रखता है कि बुर्जुर्गों की यह सारी दस्तावेज़ात और असनाद व इजाज़त को देख और पढ़कर अब कोई सलीमुत्तबअ ज़ी शऊर और हिदायत का तालिब मुतअल्लिम या मुअल्लिम या कोई आलिम सिलसिलए मदारिया बदीइया के इजराए फ़ैज़ का इंकार नहीं करेगा और बद ज़बानी और बद कलामी करके अपनी आक़बत ख़राब करने से डरेगा । वल्लाहु तआला हुवलमौफ़ुक़ वल हादी इला तरीक़ल हक़्क़ुल मुहक़्क़िक़ वसल्लल्लाहु तआला अला ख़ैरे ख़लक़िही मुहम्मदिंव व अला आलिही व सहबिही अजमईन बजाहे सैयदिल मुरसलीन । आमीन आमीन या रब्बल आलमीन ।

ख़ानक़ाहे बदायूँ पर सिलसिलए मदारिया का फ़ैज़ान :

बदायूँ शरीफ़ सदियों से इल्म व फ़ज़्ल का मरकज़ रहा है । बड़े जैय्यिद व अकाबिर उलमा व फ़ुज़ला और औलिया अल्लाह यहाँ से ज़ुहूर पिज़ीर हुए हैं,, शैख़ मुहम्मद जहिन्दा जो मुरीद व ख़लीफ़ा हज़रत सैयदना कुत्बुल मदार वज्द में कूदा करते थे ।

बदायूँ में मुत्तसिल तालाब चन्दोखर में एक मक़बरा बतौर गुम्बद के बना है उसमें आपका मज़ार है । (किताब बदायूँ क़दीम व जदीद मतबूआ निज़ामी प्रेस बदायूँ 1920ई0)

हज़रत अल्लामा अब्दुल क़ादिर बदायूनी व ताजुल फ़हूल अल्लामा शाह फ़ज़्ले रसूल बदायूनी और अल्लामा अब्दुल मुक़्तदिर व शाह अब्दुल क़दीर अलैहिमुर्रहमह जो बदायूँ की ज़ेब व ज़ीनत हैं और अकाबिरीन के पेशवा व मुक़्तदा हैं । आप सभी हज़रात पर भी नवाज़िशाते मदारिया की बारिश हुई है और फुयूज़ व बरकाते मदारियत से बहरावर हुए हैं। आपका शजरए मदारिया इस तरह है,,

ज़िक्रे मशाइख़े हुस्सामिया

हुज़ूर सैयदना सैयद बदीअ उद्दीन कुत्बुल मदार रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के खुलफ़ाए बावक़ार के असमाए गिरामी में उम्दतुल वासिलीन ज़ुब्दतुल वासिलीन हज़रत सैयदना मौलाना हुसाम उद्दीन असफ़हानी सलामती कुद्दिसा सिर्रहू का इस्मे गिरामी निहायत ही मशहूर व मारूफ़ है । आप हिन्दुस्तान के ज़ी इफ़्तिख़ार और बावक़ार उलमा में सरे फ़ेहरिस्त हैं । सुलतान इब्राहीम शरक़ी जौनपुरी के अहदे हुकूमत में ज़ी मन्सब व बामुक़ाम आलिम थे। तुहफ़तुल अबरार में है कि आप बहुत ही तेज़ तबअ दानिशवर थे । अचानक आप हुज़ूर सैयदी कुत्बुल मदार की मुहब्बत में असीर हो गये । हुआ यह कि एक मरतबा ख़लवते ख़ास के वक़्त जबकि हमनशीनों और खुलफ़ा को भी क़ुर्बे सोहबत की मजाल नहीं होती थी आप ग़लबए शौक़ में दीवानावार बेइख़्तियार ख़लवत ख़ानए कुत्बे मदार में दाख़िल हो गए। हुज़ूर कुत्बुल मदार ने इरशाद फ़रमाया, ऐ फ़लाँ ! कोई बे अदब ख़ुदा तक नहीं पहुँचा। हज़रत हुसाम उद्दीन कुद्दिसा सिर्रहू ने अर्ज़ किया, हुज़ूर ! इस वक़्त अगर मैं अदब से काम लेता तो अल्लाह के जमाल से महरूम रह जाता । अब जबकि मैंने अदब को तर्क कर दिया ख़ुदा तक रसाई हो गयी ।

Scanned by CamScanner

हुज़ूर सैयदना कुत्बुल मदार इस जवाब से ख़ुश हुए, इरशाद फ़रमाया, सलामती ! सलामती !

यह लक़ब उसी दिन से आप पर चस्पाँ हो गया ।

"सलामती न शवी ता मलामती न शवी"

हज़रत मौलाना हुसाम उद्दीन सलामती को ही यह शरफ़ हासिल हुआ कि आपने हुज़ूर सैयदना कुत्बुल मदार ज़िन्दा शाह मदार रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का जनाज़ा पढ़ाया। आपके बड़े बड़े ख़ुलफ़ाए बावक़ार हुए जिन्होंने फ़ैज़ाने मदारियत को लोगों में तक़सीम फ़रमाया, इन्हीं ख़ुलफ़ाए ज़विल एहतेराम में से हज़रत शैख़ मुहम्मद उलाउल मुनीरी कुदिसा सिर्रहू हैं जो शैख़ क़ाज़िन शत्तारी के लक़ब से मशहूर व मारूफ़ हैं । आपसे हाजी हमीद उद्दीन बिन शम्सुद्दीन ने और उनसे नेमतुल्लाह चिश्ती ने और उनसे शैख़ क़ासिम सिद्दीक़ी ने फ़ैज़ाने मदारियत हासिल किया ।

हज़रत मौलाना हुसामुद्दीन सलामती रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के विसाल का क़तअए तारीख़ यह है,,

कुत्बे फ़लके जहाने जबरूत
लाहूते मुआरिफ़े मुनीआ
पीरश कुत्बुल मदारे आलम
दादश ज़ा सलामती ज़ारीआ
आँ शाह हुसामे दीन व दुनिया
किश हस्त मनाक़िबे रफ़ीआ
पिदरश हसन अस्त हुसैनिउल अस्ल
ऊ बूदह दू असफ़हाने ज़ौआ
अलकिस्सा नहुम रबीउल अव्वल
चूँ रफ़्त ब जन्नते वसीआ
तारीख़श रा चुनीं ख़िरद गुफ़्त
ऊ बूदह ख़लीफ़ए बदीआ
840 हि0

(तज़किरतुल मुत्तक़ीन सफ़ा 154)

हज़रत मौलाना वजीह उद्दीन गुजराती पर फ़ैज़ाने मदारियत :

हज़रत मौलाना वजीह उद्दीन सानी गुजराती कुद्दिसा सिर्रहू जो अपने वक़्त के ताजदारे इल्म व फ़न और ज़ुब्दए मशाइख़े ज़मन थे आपका सिलसिलए बैअत व ख़िलाफ़त मौलाना हुसाम उद्दीन सलामती कुद्दिसा सिर्रहू से जा मिलता है । तक़रीबन ९९४ हिजरी में आपका विसाल है ।

सिलसिलए क़लन्दरिया पर फ़ैज़ाने मदारियतः

हज़रत हाफ़िज़ अली अनवर क़लन्दर कुद्दिसा सिर्रहू जो शाह अली अकबर क़लन्दर के ख़लफ़े अकबर हैं और ख़लीफ़ा व जानशीन हैं शाह तुराब अली काकौरवी क़लन्दर के शाह तुराब अली क़लन्दर इब्ने शाह मुहम्मद काज़िम अपनी किताब उसूलुल मक़सूद में रक़म फ़रमाते हैं,,

बादे हम्दे ख़ालिक़े अर्ज़ व समा
हम पस अज़ नाते मुहम्मद मुस्तफ़ा
मी कशम दर नज़्मे सिल्के दिल पज़ीर
मुजमला नामे हुमः पीराने पीर
कां दरां जुमला ज़े लुत्फ़े कारसाज़
अज़ दो शाहंशाह गर दीदम मजाज़
अव्वलन अज़ा वालिदे ख़ुद बिलयक़ीं
आँ शहे काज़िम रईसुल आरफ़ीं
कू ज़े तिफ़ले कर्द मा रा तरबियत
दर शरीअत हम तरीक़त मारफ़त
बाद अज़ाँ अज़ शाह मसऊदे वली
जानशीने सैयदे बासित अली
कू मरा अज़ लुत्फ़ ख़ुद बगिरफ़्ते दस्त
बैअतश करदम कि ऊ पीरे मन अस्त
फ़ैज़याबे अज़ बासित अन्द आँ हर दो शाह
यक ख़लीफ़ा यक ख़लफ़ बे इश्तिबाह

इब्तिदा ज़े नामे बासित ज़ी सबब
गोयम अन्दर जुमला शजरा बे तअब
हाजते तकरारे नामे पाके शाँ
नीस्त दर हर सिलसिला मर बादे आँ
नाम हर एक रा ब तरतीब अज़ तुराब
याद गीरद दर्ज कुन अन्दर किताब

शजरए मदारिया

शाह बासित शैख़ा अलहदया इमाम
शैख़ा फ़तह व मुजतबा पीरे हुमाम
अब्दे कुद्दूस अस्त व हम हाजी बुढन
हम अबुल फ़तह अस्त मिस्कीं दर सुख़न
शैख़ा काज़िन हम हुसाम उद्दीन इमाम
हम बदीओ बू यज़ीदे नेक नाम
शैख़ अमीन उद्दीन बाशद बाद अज़ाँ
हम अलमबरदारे सुलताने ज़माँ
बाद अज़ाँ सिद्दीके अकबर राहबर
हम इमामे दोसरा ख़ैरे बशर
ई उसूले सबअ रा करदम बयाँ
शोबओ फ़रअन्द दीगर ग़ैर अज़ाँ
जुमलहा रा वालिदो पीरम मजाज़
गश्ता अम मन हम बहर यक सरफ़राज़
दीगर अज़ औलादे शाहे मुजतबा
शाह अब्दुल्लाह नामी पेशवा
नीज़ हर एक रा इजाज़त याफ़तम
अज़ पये तलक़ीं ख़िलाफ़त याफ़तम
ऊ ज़े अम्मे ख़्वेशे रहमाँ नामवर
अज़ अलहदया शुदा ऊ मुशतहर

मोलवी मानवी दर मन्ज़ूमए मुख़्तसेरा बदीं मानी इशारत करदा गुफ़्ता अन्द –

नीज़ अब्दुल कुद्दूस अब्दे सलाम
अज़ बुढ्ढन होजी अज़ हुसामे हुमाम
ऊ बुल फ़तह ऊ ज़ो क़ाज़िन दाश्त
आँ चे कुत्बुल मदार दर वै काश्त
बा मदारिया रोज़ा व शब बा बाशेम
बदु व पेवस्ता चूँ दो लब बा बाशेम

हज़रत मुहम्मद ग़ौस ग्वालियरी का शजरए मदारिया :

हज़रत हाजी हमीद उर्फ़ शैख़ मुहम्मद ग़ौस ग्वालियरी जो ग्वालियर मध्य प्रदेश की ज़ेबो ज़ीनत और शानो शौकत हैं । सिलसिलए मदारिया में आपको निस्बत व इजाज़त सुलतानुल मोवहिहदीन शैख़ ज़हूर हाजी हुज़ूर कुद्दिसा सिर्रहू से है । उनको निस्बत व इजाज़त हज़रत शैख़ हिदायत उल्लाह सरमस्त कुद्दिसा सिर्रहू से है उनको निस्बत व इजाज़त हज़रत क़ाज़िन मदारी कुद्दिसा सिर्रहू से है उनको निस्बत व इजाज़त हज़रत शैख़ हुसाम उद्दीन सलामती कुद्दिसा सिर्रहुल क़वी से है उनको इजाज़त व ख़िलाफ़त हुज़ूर सैयदना सैयद बदीअ उद्दीन कुत्बुल मदार ज़िन्दा शाह मदार कुद्दिसा सिर्रहू से है । (तज़किरतुल मुत्तक़ीन सफ़ा 159)

हज़रत ईसा फ़क़ीह पर फ़ैज़ाने मदारियत :

हज़रत शैख़ ईसा फ़क़ीह सूफ़ी मुहद्दिस मुफ़्ती गोपामवी जो दसवीं सदी के अजिल्ला अकाबिर में से हैं फ़क़ीह और मुहद्दिस होने के साथ साथ एक बहुत ही सूफ़ी साफ़ी मिजाज़ के बुर्जुग हैं आप पर भी मदारियत के फुयूज़ व बरकात की बारिश हुई है । आपका शजरए मदारिया इस तरह है,,

शैख़ ईसा फ़क़ीह मुहद्दिस गोपामवी, अल्लामा वजीह उद्दीन गुजराती, शैख़ मुहम्मद ग़ौस ग्वालियरी, हज़रत हाजी ज़हूर हुज़ूर हज़रत अबुल फ़तह हिदायत उल्लाह सरमस्त, हज़रत क़ाज़ी क़ाज़िन

हज़रत मौलाना हुसाम उद्दीन सलामती, हज़रत कुत्बुल अक़्ताब सैयद बदीअ उद्दीन कुत्बुल मदार कुद्दिसा सिर्रहू, हज़रत तैफ़ूर शामी, हज़रत अमीन उद्दीन शमी अल्ख । (तज़किरतुल मुत्तक़ीन सफ़ा 159)

शजरए मदारिया शाह अमीन उद्दीन :

मख़दूमुल मुल्क हज़रत यहया मुनीरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जिन्होंने अपने क़ुदूमे मैमनत लुज़ूम से सरज़मीने बिहार को शरफ़ व हयात अता फ़रमाया जो आस्माने विलायत के माहे मुनीर और मेहरे मुनव्वर भी हैं और बाग़े रिसालत मआब सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम के गुलेतर भी हैं जिनके पोतों और नवासों की फ़ेहरिस्त में सैयद अहमद चर्मपोश और सैयदना गुलाम हैदर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जैसी जलीलुल क़द्र हस्तियाँ आज भी सरज़मीने बिहार की पेशानी की ज़ीनत हैं । हज़रत मख़दूमुल मुल्क ने अपनी हयाते ज़ाहिरी में अपने मुरीद व ख़लीफ़ा नविश्ताए तौहीद से इरशाद फ़रमाया था कि किताब अवारिफ़ुल मुआरिफ़ तुम्हें कुत्बुल मदार ज़िन्दा शाह मदार ही पढ़ा सकते हैं, जौनपुर जाकर उनसे शरफ़े तलम्मुज़ हासिल करो और कुत्बुल मदार से अवारिफ़ुल मुआरिफ़ पढ़कर अहले मारफ़त बन जाओ । सिलसिलए मदारिया का फ़ैज़ान आप पर आपके मुरीदों पर और आपकी ख़ानक़ाह शरीफ़ के सज्जादा नशीनों पर आम हुआ चुनान्चे शाह अमीन उद्दीन अहमद सज्जादा नशीन ख़ानक़ाह हज़रत मख़दूमुल मुल्क यहया मुनीरी कुद्दिसा सिर्रहू अपनी किताब सिलसिलतुल लआली मतबूआ मतबए अनवारे मुहम्मदी लखनऊ में अपना और अपने बुज़ुर्गों का शजरए मदारिया इस तरह नक़्ल फ़रमाते हैं,,

ब आँ फ़रमाँ रवाए काबा कौसेन
मुहम्मद दोस्तदारे कुर्रतुल ऐन
ब मम्दूहे खुदा सिद्दीक़े अकबर
बुज़ुर्ग अज़ जुमला याराने पयम्बर

व बुलख़ैर आँ कि शाह सादिक़ीन अस्त
अलमबरदारे ख़ात्मुल मुरसलीन अस्त
व कुत्बे दो जहाँ तैफ़ूर शामी
व अश रा मायए यहयल एज़ामी
व आली बारगाहे ज़ाते अक़दस
रबीऊँ आँ साकिने बैतुल मुक़द्दस
व अब्दुल्लाह मक्की कां दर आईन
गदायानश चूँ शाहान व सलातीन
व पीरे सजदागाहे अहले इरफ़ाँ
बदीअ उद्दीं मदारे अहले ईमाँ
व आँ शाहे हुसाम उद्दीं पुरअज़ नूर
कि दर आलम फ़ताद अज़ रफ़्तअश शूर
व आँ अज़ लौसे दुनिया पाकदामन
शहे फ़िरदौस मसकन शाह क़ाज़न
व शैख़ी बादए तौहीद दर दस्त
शहे बुल फ़तह दौराँ पीर सरमस्त
व आँ हाजी हमीद आँ साहिबे दिल
सिपहरे मारफ़त रा बद्रे कामिल
व सर अन्दाज़ शौसे सालिके राह
शहे अब्दुस्सलाम आँ शाहे ज़ीजाह
व आँ सैयद नसीरूद्दीं कि आलम
अज़ु जूयंद नुसरत जुमला बाहम
व आँ सैयद तक़ी कन्ज़ा तक़ायश
ख़लायक़ जुमला मशग़ूले नवायश
बवक़्ते पाक साहत हालतो क़ाल
निज़ाम उद्दीं बुज़ुर्गे कामिलुल हाल
व आँ हादी कश अहलल्लाह दानन्द
बनामश ख़ल्क़े अहलल्लाह ख़ानन्द
व शैख़े वक़्त सुलतानुल हक़ीक़त
मुहम्मद जाफ़र आँ पीरे तरीक़त

ब ख़ुश ख़ालके कि दर लफ्ज़ो मुसम्मा
ख़लीलुद्दीं ख़लीलुल्लाह ब माना
ब मुनइम कू ज़ो फ़ज़्ले मुनइमे पाक
नेअमहाए फ़रावाँ करदा इदराक
ब महबूबे कि चश्मे जाँ बरोयश
हसन शुद बा अली नामे नकोयश
ब शैख़ो दीं कि दर आलम वली शुद
मोतरिफ़ हज़रत यहया अली शुद
ब आँ अशरफ़ अली फ़िरदौस मसकन
कि अशफ़ाको करम रा बूद मख़ाज़न
ब पीरे मर जमाल आँ नूर सीमा
कि आमद दर कमाले फ़क्रे यकता

(तज़किरतुल मुत्तक़ीन सफ़ा 160–161)

हकीम सैयद कुरबान हुसैन का शजरए मदारिया:

हकीम सैयद कुरबान हुसैन इब्ने हकीम औलाद हुसैन इब्ने हकीम सैयद शेर अली इब्ने सैयदुस्सादात मम्बउल हसनात हकीम नूर उद्दीन क़ादरी चिश्ती सोहरवर्दी मदारी । कुत्ब अकबराबादी मुहल्ला गढ़िया का शजरए मदारिया इस तरह है,,

चू अज्रे फ़ैज़ा ख़ुद सिद्दीक़ रा दाद
ब अब्दुल्लाह रसीद आँ इल्मे इरशाद
मुरीदे ऊ यमीन उद्दीन शामी अस्त
अज़ू तैफूर हम बा नेकनामी सत
बदीअ उद्दीन अज़ू बस फ़ैज़हा याफ्त
हुसाम उद्दीन अज़ू नूरे बया याफ्त
मुरीदश शैख़ क़ाज़न पीरे सरमस्त
व ज़ू हाजी ज़हूर आमद ज़बरदस्त
मुरीदे ऊ मुहम्मद ग़ौस बा शान
अज़ू आरिफ़ अज़ू ईसा व बुरहान
अज़ू शाह व रज़ा व हम इनायत
ज़िया उद्दीन अज़ू हम याफ्त दौलत

अज़ाँ फ़ैज़ो रसीद अमजद अली रा
मुहिब्बे हम नबी व हर वली रा
ज़ लुत्फ़े बेकरावे शाहे अमजद
शुदा मश्मूल नूर उद्दीन अहमद
ज़ा नूर उद्दीन अहमद फ़ैज़ो कामिल
व सैयद मेहर अली गरदीद हासिल
ख़ुदायन्दा तुफ़ैले ईं बुज़ुर्गां रा
बकुन रहमे बहाले ज़ारे कुर्बां

तज़किरा मशाइख़े तालिबाने मदारिया

हुज़ूर सैयदना सैयद बदीअ उद्दीन कुत्बुल मदार ज़िन्दा शाह मदार रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के ख़ुलफ़ाए नामदार में हज़रत क़ाज़ी महमूद कन्तूरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का नामे नामी व इस्मे गिरामी मोहताजे तअर्रुफ़ नहीं है । गुर्जे दानिशमन्दाँ, तेग़े बरहना के लक़ब से मशहूर हज़रत क़ाज़ी मौसूफ़ जामेअे शरीअत व तरीक़त और ग़व्वासे मारफ़त व हक़ीक़त होने के साथ साथ इन्तिख़ाबे निगाहे कुत्बुल मदार थे । आप जहाँ अज़ीमुल क़द्र आलिम, साहिबे तसानीफ़ फ़ाज़िल, वसीउस्सदर फ़क़ीह और मन्सबे अदालत व इन्साफ़ पर मुतमक्किन क़ाज़ी थे वहीं हज़रत मदारे पाक की ख़ुसूसी तवज्जो और करमफ़रमाई से मरतबाए विलायते उज़मा पर मसनद नशी भी थे । अपने मुरशिदे तरीक़त हुज़ूर मदारे पाक से बेहद हुस्ने अक़ीदत रखते थे ।

मुरीद होने का वाक़आ :

एक मरतबा हुज़ूर सैयदना कुत्बुल मदार रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने जौनपुर से कन्तूर जाने का इरादा फ़रमाया और तशरीफ़ ले गये । क़स्बो कन्तूर की मस्जिद में नुज़ूले इजलाल फ़रमाया और अपने रुफ़क़ा व ख़ुद्दाम के साथ शहर वालों की जमाअत का इन्तिज़ार किए बग़ैर आपने नमाज़ अदा फ़रमा ली और अव्वल वक़्त की अफ़ज़लियत को जाने न दिया । थोड़ी देर के बाद क़ाज़ी

महमूद अपने तलामज़ा के साथ मस्जिद में वारिद हुए और नमाज़ अदा करके हज़रत कुत्बुल मदार से जमाअत के लिए इन्तिज़ार न करने की बाबत आमादए बहस व तकरार हुए अपनी गुफ्तुगू शुरू की । हुज़ूर मदारे पाक ने उनके तर्ज़े कलाम से समझ लिया कि मुबाहिसे क आग क़ाज़ी मौसूफ़ के अन्दर गर्म है गुफ्तुगू लम्बी होगी । पस इस ख़याल से हुज़ूर मदारे पाक ने इरशाद फ़रमाया कि क़ाज़ी ने शायद कलाम मजीद नहीं पढ़ा और न ही उसका मुतालआ किया है । क़ाज़ी मौसूफ़ ने अर्ज़ किया कि हुज़ूर ! मेरा कलाम कलामे जलील के मुवाफ़िक़ है । हुक्म हुआ कि क़ाज़ी के कुतुबख़ाने से कुरआन मजीद व फुरक़ाने हमीद लाया जाये। जब कुरआन मजीद पेशे ख़िदमत हुआ और औराक़ खोले गये तो देखते हैं कि सारे वरक़ सादा व सफ़ेद हैं, हुरूफ़ देखने में नहीं आते। यह मन्ज़र देखकर हज़रत क़ाज़ी साहब हैरत में पड़ गये और फ़िक्र व अंदेशे में डूब गये और अर्ज़ किया कि हुज़ूर ! आपका इस्मे गिरामी क्या है ? हुज़ूर ने इरशाद फ़रमाया, बदीअ उद्दीन । इतना फ़रमाना था कि क़ाज़ी मौसूफ़ के ज़हन के दरीचे खुल गये और उनके वालिद माजिद के मुरशिद शैख़ अबुल फ़तह शतारी रहेमहुल बारी का मकूला याद आ गया जिसे उन्होंने इनके मुरीद होने के वक़्त इरशाद फ़रमाया था । वह मकूला यह है,, या (क़ाज़ी मौसूफ़) तू नसीबे का सिकन्दर है। हज़रत सैयद बदीअ उद्दीन कुत्बुल मदार की ज़ाते गिरामी से मुस्तफ़ीज़ होगा । मुफ़ज़्ज़िले हक़ीक़ी की करम नवाज़ी से इसका मुक़द्दर रौशन होगा और वली साहिबे तसर्रुफ़ात बनेगा और इसका सिलसिलए रुश्द व हिदायत जारी व सारी रहेगा ।

यह ख़याल आते ही होश ठिकाने लगा, माज़रत चाही और अर्ज़ी लगाई कि हुज़ूर ! मुझे अपने गुलामों के ज़ुमरे में दाख़िल फ़रमा लिया जाए । हुज़ूर मदारे पाक ने हुक्म फ़रमाया कि जब तक अपने इस इल्म को फ़रामोश नहीं कर देते हो हरगिज़ हरगिज़ दाख़िले बैअत नहीं करूँगा । क़ाज़ी सर गरेबान में डाले महवे हैरत हैं कि जो इल्म मुझे हासिल है उसे कलअदम व फ़रामोश कैसे

किया जा सकता है लिहाज़ा आपने अपनी आजिज़ी व इन्किसारी पेश की । अर्ज़ किया, हुज़ूर ! यह मेरे बस का काम नहीं है । हुज़ूर मदारे पाक ने अपना लुआबे दहन शरीफ़ आपके मुँह में डाल दिया,, अलइल्म हिजाबुल अक्बर,, का जो पर्दा उन पर पड़ा हुआ था उठ गया और तबक़ाते अर्ज़ी व समावी के तमाम अहवाल व असरार उन पर रौशन हो गये और हुज़ूर मदारे पाक की खुसूसी इनायत यह हो गई कि आपको अपने हलक़ए इरादत में दाख़िल फ़रमाकर अपनी विलायत व ख़िलाफ़ते मख़सूसा से मुमताज़ फ़रमाया आपसे सिलसिलए मदारिया बनाम तालिबाने मदारिया जारी हुआ। यह सिलसिला आज भी जारी है और इंशा अल्लाह क़्यामत तक जारी रहेगा । आपका आस्ताना शरीफ़ कन्तूर शरीफ़ नवाही लखनऊ में मरजए ख़लायक़ है ।

क़तए तारीख़े वफ़ात :

जनाबे क़ाज़ीए महमूद ज़ीशाँ
फ़िरोज़ा आँ आफ़ताबे औज जाहे
चूँ आज़िम जानिबे मुल्के बक़ा शुद
ज़ा दुनिया आँ मुआरिफ़ दस्तगाहे
नविश्तम अज़ सरे आहो बुका साल
ज़ा दुनियां आह रफ़्ता दीं पनाहे
898 हिजरी

शाह मीठे मदार रज़ियल्लाहु अन्हुः

हज़रत क़ाज़ी सैयद महमूद कन्तूरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बारगाहे कुत्बुल मदार रज़ियल्लाहु तआला अन्हु में इसक़दर अज़ीज़ व मक़बूल थे कि सरकार ज़िन्दा शाह मदार रज़ियल्लाहु अन्हु जब लखनऊ के गिर्दो नवाह से गुज़र फ़रमाते तो क़ाज़ी महमूद कुद्दिसा सिर्रहू पर खुसूसी तवज्जो फ़रमाते । अपने दीदार से मुशर्रफ़ फ़रमाकर इकरामात व नवाज़िशात की बारिश बरसाते । एक मरतबा क़ाज़ी साहब ने सरकार मदारे पाक को कैफ़ व सुरूर की हालत में देखकर अपने अरमानो की झोली फैला दी, अर्ज़ किया, हुज़ूर ! अनवारे मुहम्मदिया व बरकाते मुर्तज़विया से आपने जिस

तरह मुझे नवाज़ा है उसका बेहद ममनून व मशकूर हूँ लेकिन गुलिस्ताने उम्मीद में अब तक कोई फूल नहीं खिला है जिसका बेहद मलाल रहता है, फ़ैज़ाने मदारियत की जिस दौलत व सरवत से आपने मुझे नवाज़ा है उसका कोई वारिसे ख़ास पैदा हो जाता तो आंखों को ठण्डक पहुँचती और क़ल्ब व जिगर को सुकून मिलता। सरकार मदारे पाक ने क़ाज़ी मौसूफ़ की पुश्त पर अपना दस्ते नूरानी फेरते हुए इरशाद फ़रमाया, क़ाज़ी महमूद ! जाओ अल्लाह तआला तुम्हें एक बेटा इनायत फ़रमायेगा जो तुम्हारा वारिसे ख़ास और मेरा मानवी फ़रज़न्द होगा । उसकी पैदाइश की ख़बर मुझे देना । यह मुज़दा सुनकर क़ाज़ी साहब बहुत ख़ुश हुए और फ़ौरन सजदए शुक्र अदा किया । जब मुद्दते मुक़र्ररा पर साहबज़ादे का तवल्लुद हुआ तो सरकार मदारे पाक तशरीफ़ लाए, अबुल हसन नाम तजवीज़ हुआ। सरकार ने बच्चे के लिए दुआए ख़ैर व बरकत फ़रमाई और एक तावीज़ अता किया और कुछ ख़ुसूसी अमानत वदीअत फ़रमाई । हज़रत मीठे मदार विलायते उज़मा के मरतबे पर फ़ायज़ हुए । सरकार की दुआ की बरकत से आपकी औलाद में बड़े बड़े मोतबहिहर उलमा और अकाबिर औलिया पैदा हुए । आपकी करामात व हालात बहरे ज़ख़्ख़ार और तोहफ़तुल अबरार वग़ैरहा कुतुबे सियर में तफ़सील से दर्ज हैं । सन 942 हिजरी में आपका विसाल हुआ और तारीख़े वफ़ात –

शाह मीठे मदार क़िब्लए दीं
अज़्म फ़रमूद चूँ ब ख़ुल्दे बरीं
साले नक़लश शुद अज़ सर इलहाम
रफ़्त हादीए दीं व इल्लीयीन

942 हिजरी

शजरए मदारिया शाह ज़की उद्दीन मानकपुरी कुद्दिसा सिर्रहू :

शाह ज़की उद्दीन मानकपुरी सज्जादा नशीन शाह करम अहमद हुस्सामी करीमी मानकपुरी का शजरए मदारिया मुहम्मद रज़ा हुस्सामी मानकपुरी ने इस तरह क़लमबन्द फ़रमाया है..

इलाही बहुरमते राज़ व नियाज़ हज़रत ज़ाते पाक व सिफ़ाते आलियात अहमदे मुजतबा मुहम्मद मुस्तफ़ा रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम, इलाही बहुरमते राज़ व नियाज़ हज़रत अमीरुल मोमिनीन हज़रत अबूबक्र सिद्दीक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु, इलाही बहुरमते राज़ व नियाज़ हज़रत क़ासिम बिन मुहम्मद बिन अबुलबक्र रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम, इलाही बहुरमते राज़ व नियाज़ हज़रत अमीरुल मोमिनीन इमाम जाफ़र सादिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु, इलाही बहुरमते राज़ व नियाज़ हज़रत सुलतानुल आरिफ़ीन बायज़ीद बुस्तामी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु, इलाही बहुरमते राज़ व नियाज़ हज़रत अब्दुल्लाह मक्की रज़ियल्लाहु तआला अन्हु, इलाही बहुरमते राज़ व नियाज़ सैयद बदीअ उद्दीन शाह मदार इब्ने सैयद अली हलबी कुद्दिसा सिर्रहू, इलाही बहुरमते राज़ व नियाज़ हज़रत क़ाज़ी महमूद कुद्दिसा सिर्रहू, इलाही बहुरमते राज़ व नियाज़ हज़रत शैख़ मीठे मदार कुद्दिसल्लाहु सिर्रहू, इलाही बहुरमते राज़ व नियाज़ हज़रत शैख़ ताहा मदारी कुद्दिसल्लाहु सिर्रहू, इलाही बहुरमते राज़ व नियाज़ हज़रत शैख़ लाड मदारी कुद्दिसा सिर्रहू, इलाही बहुरमते राज़ व नियाज़ ख़्वाजा सुलतान मुहम्मद क़द्दसल्लाहु सिर्रहू, इलाही बहुरमते राज़ व नियाज़ हज़रत कुत्बुल अक़ताब हज़रत शाह अब्दुल करीम मानकपुरी कुद्दिसल्लाहु सिर्रहू, इलाही बहुरमते राज़ व नियाज़ हज़रत सुलतान बायज़ीद मानकपुरी कुद्दिसा सिर्रहू, इलाही बहुरमते राज़ व नियाज़ हज़रत शाह दानियाल क़द्दसल्लाहु सिर्रहू, इलाही बहुरमते राज़ व नियाज़ हज़रत शाह मुहम्मद अहमद कुद्दिसल्लाहु सिर्रहू, इलाही बहुरमते राज़ व नियाज़ हज़रत शाह महबूब आलम कुद्दिसा सिर्रहू, इलाही बहुरमते राज़ व नियाज़ हज़रत शाह करम अली कुद्दिसल्लाहु सिर्रहू, इलाही बहुरमते राज़ व नियाज़ हज़रत शाह गुलाम चिश्ती कुद्दिसा सिर्रहू, इलाही बहुरमते राज़ व नियाज़ हज़रत शाह मुहम्मद मोहसिब कुद्दिसल्लाहु सिर्रहू, इलाही बहुरमते राज़ व नियाज़ हज़रत शाह करम अहमद हुस्सामिउल करीमी मानकपुरी कुद्दिसल्लाहु सिर्रहू, ख़ाकेपाए सग़ीर व कबीर फ़क़ीर ज़की उद्दीन सज्जादा

नशीन मानकपुरी बक़लम मुहम्मद रज़ा हुस्सामिअल करीमी मानकपुरी । (तज़किरतुल मुत्तक़ीन सफ़ा 152)

शजरए तैफूरिया मदारिया सज्जादा नशीनान ख़ानक़ाहे सलवन शरीफ़ ज़िला रायबरेली :

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

इलाही बहुरमते राज़ व नियाज़ अहमदे मुजतबा मुहम्मद मुस्तफ़ा रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम, इलाही बहुरमते राज़ व नियाज़ अमीरूल मोमिनीन हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु, इलाही बहुरमते राज़ व नियाज़ हज़रत अमीरूल मोमिनीन हज़रत क़ासिम बिन मुहम्मद बिन अबूबक्र रज़ियल्लाहु तआला अन्हु, इलाही बहुरमते राज़ व नियाज़ हज़रत अमीरूल मोमिनीन इमाम जाफ़र सादिक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु, इलाही बहुरमते राज़ व नियाज़ सुलतानुल आरिफ़ीन बायज़ीद बुस्तामी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु, इलाही बहुरमते राज़ व नियाज़ हज़रत शाह अब्दुल्लाह मक्की कुद्दिसल्लाहु सिर्रहू, इलाही बहुरमते राज़ व नियाज़ हज़रत बदीअ उद्दीन सैयद शाह मदार बिन सैयद अली हलबी कुद्दिसल्लाहु सिर्रहू, इलाही बहुरमते राज़ व नियाज़ हज़रत क़ाज़ी महमूद कुद्दिसल्लाहु सिर्रहू, इलाही बहुरमत हज़रत शैख़ मीठे मदार कुद्दिसल्लाहु सिर्रहू, इलाही बहुरमत हज़रत शैख़ ताहा मदारी कुद्दिसल्लाहु सिर्रहू, इलाही बहुरमत हज़रत शैख़ लाड मदारी कुद्दिसा सिर्रहू, इलाही बहुरमत हज़रत ख्वाजा सुलतान मुहम्मद कुद्दिसा सिर्रहू, इलाही बहुरमत हज़रत हाजीअल हरमैन शरीफैन शाह अब्दुल करीम मानकपुरी कुद्दिसा सिर्रहू, इलाही बहुरमत हज़रत शैख़ पीर मुहम्मद अशरफ़ सलोनी कुद्दिसा सिर्रहू, इलाही बहुरमत हज़रत शाह पीर मुहम्मद पनाह कुद्दिसा सिर्रहू, इलाही बहुरमत हज़रत पीर करीम अता कुद्दिसा सिर्रहू, इलाही बहुरमत हज़रत शाह पीर मुहम्मद पनाह अता कुद्दिसा सिर्रहू, इलाही बहुरमत हज़रत शाह पीर मुहम्मद हुसैन अता कुद्दिसा सिर्रहू, इलाही बहुरमत हज़रत शाह पीर मुहम्मद मेहदी अता कुद्दिसा सिर्रहू, इलाही बइज्ज़

व ग़रीबी मुहम्मद नईम अता करीमी अशरफ़ी अख़फ़ा गुनाहम व बख़्श व जमीअ हाजात व मुहिम्माते दीनी व दुनयवी मन बर आ बजाहिन्नबीयि व आलिहिल अबरार ई शजरए मुतबर्रिका तैफूरिया कि ब फ़क़ीर रसीदा अस्त हस्बुल इरशाद जनाब शाह मुहम्मद अमीर हसन साहब मदारी बग़रज़ मशमूले किताब तज़किरतुल मुत्तक़ीन तहरीर करदा शुदम ।

मुहम्मद नईम अता अफ़ी अन्हु

12 रबीउस्सानी 1325 हिजरी

(तज़किरतुल मुत्तक़ीन सफ़ा 152)

यानी, यह शजरए मुबारका ख़ुद शाह मुहम्मद नईम अता शाह कुद्दिसा सिर्रहू ने अपने हाथ से लिखकर तज़किरतुल मुत्तक़ीन में शामिल करने के वास्ते मौलाना शाह मुहम्मद अमीर हसन साहब मदारी साहिबे तज़किरतुल मुत्तक़ीन को इनायत फ़रमाया ।

नोट :- मानकपुर और सलवन शरीफ़ के दोनों शजरों में सुलतान बायज़ीद बुस्तामी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और हुज़ूर सैयद बदीअ उद्दीन ज़िन्दा शाह मदार रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के दरमियान एक नाम हज़रत अब्दुल्लाह मक्की रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का किताबत की ग़लती से आ गया है । तहक़ीक़ यह है कि यह हज़रत सैयदना अमीरुल मोमिनीन सिद्दीक़ अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु व सैयदना अमीरुल मोमिनीन मौला अली कर्रमल्लाहु वजहहुल करीम के ख़लीफ़ा हैं जैसा कि सिलसिलए मदारिया के दूसरे शजरात से वाज़ेह है । वल्लाहु आलम बिस्सवाब ।।

मशाइख़े दीवानगाने मदार

जानेमन जन्नती रज़ियल्लाहु अन्हुः

सरगिरोहे दीवानगाने मदार उम्दतुल अख़यार वल अबरार वाक़िफ़े असरारे जली व ख़फ़ी हुज़ूर सैयदना सैयद जमाल उद्दीन जानेमन जन्नती रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का मुक़ाम ख़ुलफ़ाए क़ुत्बुल मदार सैयद बदीअ उद्दीन ज़िन्दा शाह मदार में ऐसे हैं जैसे

चाँद का मुक़ाम सितारों में । आप हुज़ूर कुत्बुल मदार रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के अज़ीज़ तरीन ख़लीफ़ा व महबूबतरीन मुरीद हैं ।

आप मुक़ामाते आलिया व उलिया व हालाते सनिय्या व रफ़ीआ पर मुतमक्किन हैं। हिन्दुस्तान के मशाहीर औलियाए किबार में आपका शुमार है । तारीख़े विलायत में अगर आपको एक तरफ़ अज़ीज़तरीन ख़लीफ़ए ज़िन्दा मदार रज़ियल्लाहु तआला अन्हु होने का शरफ़ हासिल है तो दूसरी तरफ़ शाने इम्तियाज़ी को बढ़ाने के लिए निस्बत की यह सरफ़राज़ी भी कम नहीं है कि आप ग़ौसे समदानी महबूबे सुब्हानी हुज़ूर ग़ौसुल आज़म अब्दुल क़ादिर जीलानी के हमशीरा ज़ादे हैं । हज़रत सैयद महमूद के फ़रज़न्द हज़रत बीबी नसीबा का दिलबन्द और हुज़ूर ग़ौसे पाक के ख़्वाहर ज़ादए अरजुमन्द होना अपनी जगह एक सआदत है लेकिन दमे मदार से हयाते नौ पाना और मदारुल औलिया कुत्बुल मदार से निस्बते बैअत व इजाज़ते ख़िलाफ़त मयस्सर होना और कुत्बुल कुबरा मदारुल दुनिया व उख़रा सैयद बदीअ उद्दीन ज़िन्दा मदार रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की सोहबत व हमनशीनी से फ़ैज़याब होना बहुत बड़ी सआदत है । मोनिसुल अरवाह, तज़किरतुस्सालिहीन, तज़किरतुल मुत्तक़ीन और सीरतुल औलिया की मुतअद्दिद किताबों में तहरीर है कि आप हुज़ूर मदारे पाक की दुआओं से पैदा हुए । ख़ुर्दसाली में इन्तिक़ाल हो गया । दमे मदार ने ऐसी फूंक उड़ाई कि हयाते मुर्दा को पैग़ामे ज़िन्दगी मिल गई । मोनिसुल अरवाह में है कि जब लोग आपका जनाज़ा लेकर चले तो हुज़ूर मदारे पाक को ख़बर दी गई, जनाज़े के सरहाने जाकर तीन मरतबा आपने जानेमन जन्नती कहकर पुकारा, दम मदार ने बेड़ा पार कर दिया । आपने आवाज़ दी और वह उठकर बैठ गए । उस दिन से जानेमन जन्नती के लक़ब से मशहूर हो गए । आप बहुत बड़े साहिबे करामात व तसर्रुफ़ात थे । आपकी मुकम्मल सवानेह इंशा अल्लाह बाद में तहरीर की जायेगी।

सिलसिलए आलिया तबक़ातिया मदारिया गिरोहे दीवानगान आप ही से जारी हुआ है।

दीवानगान :

दीवानगान कौन लोग हैं ? वह लोग जो जमाले हुस्न आफ़री के दीवाने, ख़ल्लाक़े ज़मां व ज़मीं के शैदा ज़ाते अल्लाहुस्समद पर फ़िदा हैं । यह लोग ऐसी दीवानगी रखते हैं कि कमाले होशियारी उसपर निसार है । ख़ाकसारी और इन्किसारी का यह आलम है कि यह उनकी जिबिल्लत से आशकारा है । हुज़ूर सैयदना कुत्बुल मदार रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि हमारे सिलसिले में दीवाना उसे कहते हैं,,(तर्जुमा)

"जो अक्सर व बेशतर औक़ात मुशाहिदए हक़ तबारक व तआला में रहता हो और उसकी आंखों में ख़ुदा का नूर जलवा नुमा हो, उसकी अक़्ले मआश मग़लूब हो गयी हो और अक़्ले मआद ज़ाहिर हो गयी हो, दीवाना वह है जो महबूबे हक़ीक़ी के दिलदार अहमदे मुख़्तार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के इश्क़ की फ़रावानी से महज़ूज़ व मसरूर रहता है और अपने महबूब के दीदार में महव व मगन होने के सबब ख़लायक़ की निगाह में दीवाना दिखाई पड़ता है । इसी वजह से उसको दीवाना कहते हैं और जिसके पास अक़्ले मआश होती है उसे आरिफ़ कहते हैं ।

ख़ुमख़ानए अज़ल के मस्ताने यानी दीवानगान, बादए लम यज़ल के दीवाने हैं जिनके दिल का जाम इश्क़े इलाही से लबरेज़ है और जिनका हाल व मक़ाल निहायत ही शौक़ अंगेज़ है । हाफ़िज़ शीराज़ी फ़रमाते हैं,,

(तर्जुमा शेर)

"यानी जो कुछ हम से रू पिज़ीर हो जाता है वही दीवानों की ताअत है क्योंकि ऐ शैख़ जी ! हम दीवानों के मज़हब में अक़्ल से काम लेना गुनाह तसव्वुर किया जाता है"

इसीलिए तो कहा गया है,,

बेख़तर कूद पड़ा आतिशे नमरूदम में इश्क़
अक़्ल है महवे तमाशाए लबे बाम अभी ।।

शैख़ सादी फ़रमाते हैं,,(तर्जुमा शेर)

1. "एक शख़्स ने एक शोरीदा हाल के पास लिखा कि दोज़ख़ की तमन्ना करते हो या बिहिश्त की ?"

2. "उसने कहा यह माजरा मुझ से न पूछो मैंने तो उसी को पसन्द किया जो मेरे महबूब ने मेरे लिए पसन्द किया है ।"

यही सच्चे इश्क़ का ग़लबा है कि माशूक़ का रुझान बहरहाल उसको मद्देनज़र रखता है ।

इन्हीं के हक़ में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है (तर्जुमा) "बेशक नेक लोग अल्लाह की नेमत में हैं" हक़ीक़त में दीवाना अपने काम में होशियार होता है । हरदम अपने माशूक़ के दीदार के इन्तिज़ार में चश्म बराह रहता है । मख़लूक़ की नज़र में बज़ाहिर दीवाना लगता है लेकिन "ली मअल्लाह" की हालत में सबसे जुदागाना व फ़रज़ाना है ।

मरदुम दीदए माजुज़ा बरुत नाज़िर नीस्त
दिल सरगश्तए मा ग़ैर तुरा ज़ाकिर नीस्त

ग़रज़कि हुज़ूर जमाल उद्दीन जानेमन जन्नती मारुफ़ व जुम्मन जवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से जो सिलसिला व गिरोह जारी हुआ वह दीवान या दीवानगान के लक़ब से मशहूर हुआ । आपके ख़ुलफ़ा व मुरीदीन की तादाद एशिया के मुमालिक में बहुत कसीर है। दीवानगान की बहत्तर शाख़ें हैं जिसकी पूरी तफ़सील कभी इसी रिसाले में आयेगी। हुज़ूर जानेमन जन्नती रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को अल्लाह जल्ला जलालहू ने बड़ी तवील उम्र अता फ़रमाया और तमाम हैवानात को आपके ताबेअ कर दिया चुनान्चे आप अक्सर व बेशतर शेर पर सवारी फ़रमाते और साँप का कोड़ा हाथ में रखते थे ।

जानेमन जन्नती की शैख़ सादी से मुलाक़ात :

एक मरतबा हज़रत जानेमन जन्नती कुद्दिसा सिर्रहू शेर पर सवार हाथ में साँप का ताज़ियाना लिए हुए रूदबार के इलाक़े में सैर फ़रमा रहे थे कि हज़रत शैख़ सादी शीराज़ी से इत्तिफ़ाक़न

मुलाक़ात हो गयी । हज़रत की यह शान देखकर शैख़ सादी मारे हैबत के कांपने लगे । हुज़ूर जमाल उद्दीन जाने मदार ने तबस्सुम फ़रमाया और शैख़ सादी को तसल्ली व तशफ़्फ़ी दी, इरशाद फ़रमाया, ऐ सादी ! इस दरिन्दे जानवर से जो मेरी सवारी में है तुझ पर हैबत और तअज्जुब तारी है कि यह इंसान के क़ाबू में कैसे है । यह कोई तअज्जुब की बात नहीं है जो बन्दा ख़ुलूसे दिल के साथ ख़ुदा की रज़ा व ख़ुशनूदी हासिल कर लेता है तो ख़ुदा तआला की बारगाह से यह रुतबा मिल जाता है कि यह शेर क्या सारी ख़ुदाई उसकी मतीअ व फ़रमांबरदार हो जाती है और सारी मख़लूक़ उसकी रज़ा जूई करती है । शैख़ सादी इस वाक़ऐ को इस तरह नज़्म फ़रमाते हैं,,

यके दीदम अज़ा अरसए रूदबार
कि पेश आमदम बर पिलंगे सवार
चुनाँ हौल ज़ाँ हाले बर मन नशिस्त
कि तरसीदनम पाए रफ़तन व बस्त
तबस्सुम कुनाँ दस्त बर लब गिरिफ़्त
कि सादी मदार आँ चे दीदी शगुफ़्त
तू हम गर्दन अज़ा हुक्म दावर मपेच
कि गर्दन न पेचद ज़ा हुक्मे तू हेच

(मन्कूल अज़ ख़ुलासतुल मदारिया)

आपकी करामात शोहरत पिज़ीर हैं ।

(बाक़ी आइन्दा)

मदार बुक डिपो

की मतबूआ किताबें

हमारे यहाँ हर किस्म की दीनी, दरसी, इस्लामी किताबें मुनासिब क़ीमत पर दस्तयाब हैं। साथ ही ''मदारे आज़म'' ''जमाले कुत्बुल मदार'', ''फ़ैज़ाने मदारुल आलीमीन'', '' हक़ीकते मदारुल आलमीन'', ''गुलिस्ताने मदार'', ''निकहते मदार'', ''शाह मदार'', ''फ़ैज़ाने सिलसिलए मदार'' नात व मनक़िब की ताज़ा और नई किताब ''दायरे हुजूर में'' और माहनामा कुत्बुल मदार'' दस्तयाब हैं। राब्ता फ़रमाकर शुक्रिया का मौका दें।

मुफ्ती अबुल हम्माद मुहम्मद इसराफ़ील हैदरी मदारी
मकनपुर शरीफ़, जिला कानपुर नगर - 209202 (यू०पी०)
मोबाइल नं० - 9793347086